

کرشن لیلا



۱۔ ٹائیٹل کِرشن لیلا

۲۔ صفحہ ۱۹۲

۳۔ عکس جنوری ۱۹۸۴ء

۴۔ کاتب مُصنّف

۵۔ آرٹ تہٕ حاشیہ (")

۷۔ موٗل (شیٹھ روپیہ) Rs.60/-

۸۔ چھاپ خانہ :-

कृष्ण-लीला

پرنٹر اینڈ پبلشر :-

فاضل کاشمیری

ساکنہ گلشن نگر۔ چھانپورہ۔ سرینگر

کشمیر ۱۹۰۰۱۵

شرمد بھگوت گیتا دنیا کی قدیم روحانی کتابوں میں بے نظیر اہمیت رکھتی ہے۔ اس کا

سورگیہ شریمتی مایاونتی بترا
کی سمرتی میں سمرپت۔
(مُصنّف)

स्वर्गीया
श्रीमती मायावंती बतरा
की
पुण्य स्मृति में
समर्पित

फाज़िल कश्मीरी



بنوُوم پان موٚرلی سوز لوٚرمَس
میٚنز لوٚیہ اوُسس تہٕ انگ انگ ساز کوٚرمَس
ووٚزُس یَیِن نِش چھیٚلتھ زِھنی مَس کدوٗرَت
تُلِتھ زَنگارِ نوٚرُک آیہ پوٚرمَس

———- - ———

شریمد گیتا جی کِس قسم کے فوق البشر انسان (سپرمین Superman) پیدا کرنا چاہتی ہے

۵۶/۲ جو سکھ سے سکھی ہو نہ دکھ سے دکھی۔ نہ خوف اُس کو آئے نہ غصّہ کبھی۔ نہ جذبوں کے



नूरुक आयि

वनोवुम पान मोरली सोज़ बोरमस
मेच्युव ओसुस त अंग अग साज़ कोरमस
वोज़ुस यस निश छलिथ छ्'न्यमस कदूरथ
तुलिथ जंगार' नूरुक आयि पोरमस

नोट : नूरुक आयि :— (सूरऐ नूरुक आयि, सूरऐ नूर छु कुरानिमजीदुक अख सूरऐ शरीफ)

स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा
मक्षयमश्नुते ॥२१॥ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥५६॥ यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५७॥

حرفِ اوّل

قومی بھائی چارہ کی لگن برقرار رکھنے کے سلسلہ میں یہ کتاب کرشن لیلاؔ میری تیسری ادبی کوشش ہے۔ اسے تخلیق کرنے اور شایانِ شان تعمیر کرنے میں مجھے ایشور اللہ کی ہمہ گیر بخشش شاملِ حال رہی، جو میرے نصیب کے کارن ہے۔ مجھے اس کتاب کی تزئین (Decoration) اور کتابت خود کرنے میں دلی مسرّت حاصل ہے۔

زیرِ نظر کتاب "کرشن لیلاؔ" کی تکمیل میں مجھے محترمہ ڈاکٹر جگت موہنی صاحبہ، پروفیسر چمن لال جی سپروؔ اور پنڈت سائلؔ کاشمیری صاحب نے تعاون دیا، اور گنیش مندر پربندھک سمتی سرینگر اور سناتن دھرم پرتاپ سبھا سرینگر نے مالی امداد دی۔ میں نے رسالہ کلیان اور اسکان بکس کلیفورنیا سے کافی فائدہ اٹھایا ہے ان کا دل کی گہرائیوں سے مشکور ہوں۔

اس کتاب میں جتنے بھی اندراجات ہیں، مجھے ان کی چند خامیوں

* दो शब्द *

कौमी भाईचारे की लगन बरकरार रखने के सिलसिले में यह किताब " कृष्ण लीला " मेरी तीसरी अदबी कोशिश है। इसे तखलीक करने और शायानि-–शान तामीर करने में मुझें ईश्वर - अल्लाह की हमागीर बख्शिश शामिल-इ-हाल रही जो मेरे नसीब के कारण है — मुझे इस किताब की तजईन (Dec-oration) और किताबत खुद करने में दिल्ली मस्सरत हासिल है ।

जेर-इ नजर किताब की तकमील के दौरान मुझे जिन कृष्ण–भक्तों ने अपना ताऊन दिया उनके अस्माएगरामी इस तरह से हैं — श्री धर्मवीर बतरा डा० जगत मोहिनी साहिबा, प्रोफेसर चमनलाल सप्रू साहिब और पण्डित पृथ्वी नाथ कोल "साइल–कश्मीरी" और जिन रसाईल से मैंने इस्तिफादा किया उनमें "कल्याण" गोरखपुर का नायाब खसूसी "भागतङ्क", और Iscon Books, California, काबिलि जिक्र हैं।

इस किताब में जितने भी इन्दराजात हैं, मुझे उनकी चन्द खामियों की तरफ इशारा

کی طرف اشارہ کرنے میں کوئی جھجک محسوس نہیں ہوتی۔ میں نے بنیادی طور پر ایک مسلمان گھرانے میں جنم لیا ہے اور اپنی تعلیم و تربیت کے دس اولیں سال اسلامیہ سکولوں میں گزارے ہیں اور اردو، عربی اور فارسی کے ماہرین اساتذہ علماء وقت سے زبان و خیالات کی چاشنی کا نقشہ اُتارا ہے۔ اس لیے میری کرشن لیلاؤں میں مذکورہ علوم کے ذخایر کی جھلکیاں اُبھرتی ہیں۔ یہ کہنا بے جا نہ ہو گا کہ رگھوپتی سہائے فراق گورکھپوری کے کلام میں جابجا ہندوستانی تہذیب کے پہلو بہ پہلو ہندی بھاشا کی کرنیں جھلملاتی ہیں جو ایک فطری امر کا آئینہ دار ہے۔ دوسری بات اس حقیقت کی نشاندہی ہے کہ نعت کہنا میری سرشت میں شامل ہے۔ اس لئے اس رنگ اور کیف و گداز سے بھی الگ نہیں رہ سکتا۔

ممکن ہے کہ قارئین حضرات میری "کرشن لیلا" پڑھ کر یا سن کر یہ بھی اندازہ کریں گے کہ لیلا کار فاضل کی شاعری اور خیالات و بیانات کا

करने में कोई झिझक महसूस नहीं होती – मैंने बुनियादी तौर पर एक मुसलमान घराने में जन्म लिया और अपनी तालीम-वतरबियत के दस अवायली साल इस्लामिया स्कूलों में गुजारे हैं और उर्दू, फारसी और अ`बी के माहिरीन असातिजा उल्माए वक्त से जबान-व-खयालात की चाशनी का नकशा उतारा है — इसलिए मेरी कृष्ण लीलाओं में मजकूरा अलूम के जवाइर की झलकियां उभरती हैं । यह कहना बेजा न होगा कि रघुपति सहाय फिराक गोरख–पुरी के कलाम में जा बजा हिन्दुस्तानी तहजीब के पहलू-ब-पहलू हिन्दीभाषा की किरणें झिलमिलाती हैं; जो एक फितरी अम्र का अईनादार है । दूसरी बात इस हकीकत की निशानदिही है कि "नात" कहना मेरी सिरिश्त में शामिल है — इस लिए रंग और कैफ–-व-गुदाज से भी अलग नहीं रह सकता —

मुमकिन है कारीन हजरात मेरी "कृष्ण-लीला" पढकर या सुनकर यह भी अन्दाजा करेंगे कि लीला-कार फाजिल की शायरी और खयालात और बया-नात का Convas बहुत वसीह है या वह तख-

کینواس بہت وسیع ہے۔ یا وہ تخیّل کے ایک حلقہ سے نکل کر دُوسرے حلقہ میں پڑنے میں کچھ تاُمل نہیں کرتا۔ یا یہ کہ وہ عاشقِ رسولؐ ہونے کے دوش بدوش کرشن بھگت اور گورو بھگت بھی ہے۔ کیونکہ فاضل نے ستگورو سری بابا گورو نانک دیو جی پر بھی اپنی کئی تخلیقات بھینٹ چڑھائی ہیں۔ یا یہ کہ وہ مُسلمان ہونے کے ساتھ ہندو بھی ہے اور سکھ بھی۔ میرا جواب کیا ہو گا؟.... کچھ بھی نہیں۔۔۔ ہاں! اتنا کہونگا کہ لوگ مُجھے "شاعر" کہتے ہیں

یہاں چند عامیوں[1] کے سوال کا جواب دینے میں مُجھے تاُمل[2] نہیں کہ مَیں نے اپنی عُمر کے گرانقدر اور مصروف ترین ۸ سال "کرشن لیلا" تصنیف اور مرتّب کرنے میں اس لئے صرف کئے کہ سری گیتا جی کے مندرجہ پیغامات اور خاص طور پر اس مقدّس[3] سلوک کا

نوٹ:-

۱۔ عامی:- ناخواندہ ۲۔ تاُمل = اندیشہ ۳۔ مُقدّس = پاک

ययुल के एक हलके से निकलकर दूसरे हलके में कुछ तअमुल नहीं करता—या यह कि वह आशकि रसूल होने के दोश-बदोश कृष्ण-भगत और गुरु भगत भी है — क्योंकि फाजिल ने सतगुर सिरी बाबा गुरु नानक देव जी पर भी अपनी कई तखल.कात भेंट चढाई हैं या यद कि वह मुसलमान होने के साथ साथ हिन्दु भी है और सिख भी — मेरा जवाब क्या होगा? .... कुछ भी नहीं......... हां। इतना कहूंगा कि लोग मुझे "शायिर" कहते हैं—

यहां चंद आमियों के सवाल का जवाब देने में मुझे तअमुल नहीं कि मैंने अपनी उम्र के गरां कदर और मसरूफ तरीं मह-व-साल कृष्ण लीला तसनीफ और मुरतब करने में इसलिए सरफ कियें कि श्री गीता जी के मुन्दरजा पैगामात और खास तौर पर इस मुकद्दस श्लोक का मैं कायिल हूं।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

مَیں قائل ہوں ـــ



ترجمہ :-

your right is to work only, but never to the fruit thereof. Let not the fruit of action be your object, nor let your attachment be to inaction.

تجھے کام کرنا ہے اور مردِ کار
نہیں اُس کے پھل پر تجھے اختیار
کیئے جا عمل اور نہ ڈھونڈ اس کا پھل
عمل کر عمل کر نہ ہو بے عمل

آشا ہے کہ وسیع النظری سے
نوازے گئے قارئین اور سامعین میری "کرشن لیلا" سے کافی حد تک متاثر ہونگے جس سے
اُن کے دلوں میں بھائی چارہ کے جذبات اُبھر آئیں گے۔

فاضل کاشمیری

گلشن نگر ـ سرینگر 15
1-1-1984

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

तुझे काम करना है ओ मर्द ए कार
नहीं उसके फल पर तुझे इख्तियार ।
किये जा अमल और न ढूंढ–इसका फल
अमल कर, अमल कर, न हो बे अमल ॥

आशा है कि वसीह-उल-नजरी में नवाजे गए कायरीन् और सामियीन मेरी " कृष्ण-लीला " से काफी हद तक मुतासिर होंगे — जिससे उनके दिलों में भाई चारा के जजबात उभर आयेंगें ॥

फ़ाजिल कश्मीरी

गुलशन नगर
श्रीनगर–१९००१५
१-१-१९८४

कश्मीर के रसखान

फाज़िल कश्मीरी ने 'बालक अवस्था' और 'कृष्ण लोला' नामक कृष्ण-काव्यों की रचना करके सूरदास, रसखान, परमानंद. नरोत्तमदास, रत्नाकर सुब्रह्मण्य भारती की कृष्ण-भक्ति-परम्परा को सुरक्षित रखा। इसके साथ राष्ट्रीय एकता और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव को बढावा देने में हम उन्हें अमीर-खुसरो, नजीर अकबराबादी, सागर निजामी, बेकल उत्साही, नजीर बनारसी आदि की परम्परा में प्रतिष्ठित पाते हैं। सिखमत के प्रति भी उन्होंने अपना अनुराग दर्शाया है और कश्मीरी भाषा में गुरु-वाणी का भावानुवाद प्रस्तुत किया है, जिसकी अत्यधिक सराहना की गई।

फाजिल कश्मीरी ऐसे उदारचेता कवि हैं जो भावात्मक एकता के तारों को झंकृत कर राष्ट्रीय एकता और सौहार्दपूर्ण वातावरण की संरचना में कृतसंकल्प हैं। उनकी कविता में हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना को ही प्रधानतया अभिमुखरित

किया गया है — कृष्ण की बांसुरी का मधुरिम स्वर एक हृदय—भावात्मक ऐक्य का संदेश देता है। वही 'जय—जय हरि' कहने लगता है। उसका हृदय पाक-पवित्र हो जाता है, फिर उसमें हिन्दू-मुसलमान का कोई भेद नहीं रहता। फाजिल साहब कृष्ण को गंगा का ऐसा पावन जल समझते हैं, जो हिन्दू और मुसलमान दोनों के दिलों के मैल को धो डालता है —

कृष्ण गो पोशवुन गंगायि हुंद जल,
छलान हेंद्यन मुसलमानन दिलुक मल।

फाजिल साहब कृष्ण की बांसुरी की मधुरता पर मोहित हैं। बाँसुरी का स्वर प्रेमात्मा है, जीवन - ऊर्जा है, 'साजे दिलबरी' है। बांसुरी में फूंक मारकर उन्होंने आत्मज्ञान का दार्शनिक रहस्य उद्घाटित किया है। ऐसी खुदी या अहमन्यता उद्भासित की है जिसपर हजारों बेखुदी कुर्बान की जासकती हैं। इसी बाँसुरी से यह आवाज निकल रही है कि अवतार और नबी दोनों अल्लाह के भेजे हुए हैं उनकी मुरली और लय दोनों एक ही हैं, 'रहमान' और 'भगवान' भी तो एक ही समान हैं। कृष्ण के रूप-रंग पर कवि अत्यधिक मोहित है। उसे ऐसा आभास होता है कि फूलों में रंगत कृष्ण की बदौलत है, उनके कारण यह संसार सुरम्य उपवन बना हुआ है। जिन व्यक्तियों

RANSLATI
This is the

के हृदय में प्रेम-सत्य की चिगारी सुलगती है उन्हीं को कृष्ण अमृत के प्याले पिलाते हैं। कृष्ण समदर्शी हैं। फाजिल साहब समझते हैं कि लोगों में जो भाईचारा, सद्भाव, सौहार्द है वह सब कुछ कृष्ण के दम से है। उनका 'कृष्ण लीला' (सचित्र) कृष्ण-काव्य में—भारतीय कृष्ण-काव्य में एक अभिवृद्धि है और वह राष्ट्रीय एकता के दीपक की लौ को सदा अकम्पित रखने वालों में अपना स्थान रखते हैं।

Nizamuddin

(निजामउद्दीन)

DR. NIZAM-UD-DIN
Prof. of Hindi
Islamia College, Srinagar
(Kashmir)

१२-१-१९८४

—.—

TEXT 38

एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः ।
न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥३८॥

etad īśanam īśasya
prakṛti-stho 'pi tad-guṇaiḥ
na yujyate sadātma-sthair
yathā buddhis tad-āśrayā



"موُرلی شبداہ اسہ گوکنن ۔ وَنن چھ رادھا کرشنہ ہے آو"

TRANSLATION

This is the divinity of the Personality of Godhead: He is not affected by the qualities of material nature, even though He is in contact with them. Similarly, the devotees who have taken shelter of the Lord do not become influenced by the material qualities.

ترتیب

صفحہ



رادھایہ بری پیالہٕ۔ ژ گوپالہٕ مہ کُن وُچھ۔ اَز کالہٕ ژیم سالہٕ دماہ۔ لالہٕ مہ کُن وُچھ

राधायि बरी प्याल’ चे गूपाल’ मे कुन वुछ
अज काल यिज़्यम साल’ दमाह लाल’ मे कुन वुछ

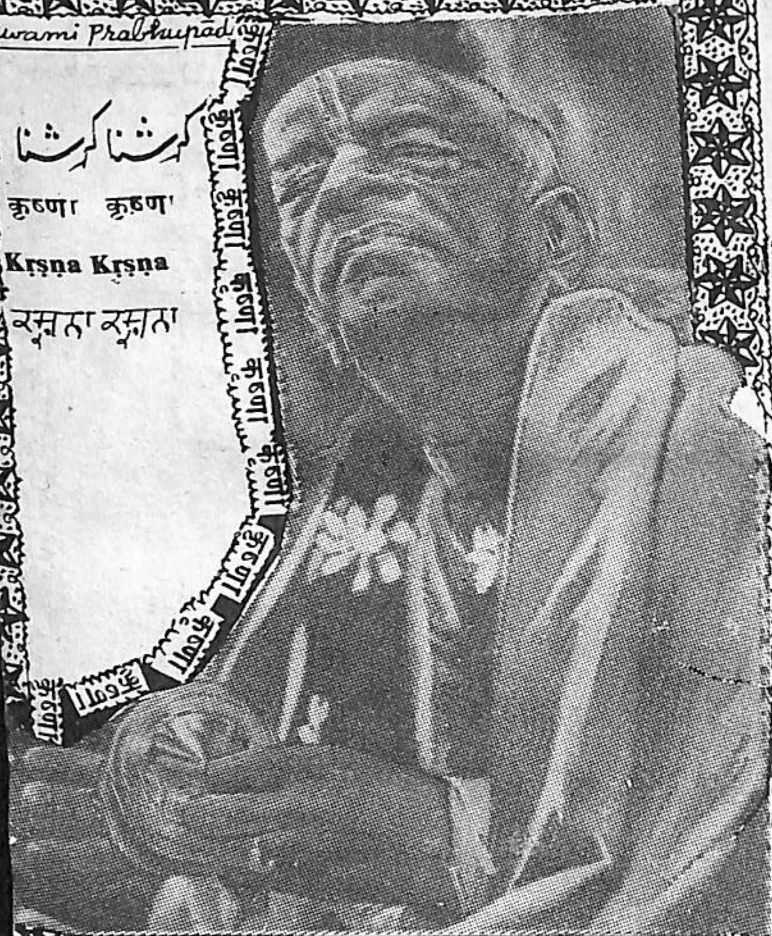
वृन्दावन कलानाथौ हृदयानन्द दायिनौ,
सुखदौ राधिका कृष्णौ भजेऽहं कुंजगामिनौ ॥

اگر چھُے ظوٗن سمرٕ بھگوانٕہ سٕندی گوٗن
ژٕ سپدی شوٗد پَنُن دِل ہیرِ تَے یوٗن
چھُ تمی سُند ناو سمرُن عینِ اِکسیر
بَناوان کیمیا گر چھُے کھوٗٹِس سوٗن

अगर छुय ज़्वन सुमर भगवानु संद्य ग्वन
च़य सपदी शौंद पनुन दिल हेरि तय ब्वन
छु तेम्य सुंद नाव सुमरुन एनि इकसीर
बनावान कीमियागर छुय खोटिस स्वन

میہ نِش آو۔ بارہا آو۔ بارہا آو
کوٗرُن میانِس وونٕدس منٛز پوٗر ٹھہراو
تمِس کُن اَکھ قَدَم تُل یارٕی لاگی
کَرِی اوٗرَے دَیا بھگوَن ژٕ اَزماو

म्य निश आव बारहा आव बार हा आव ।
कौरनु म्यानिस वोन्दस मंज़ पूर ठेहराव ॥
तेमिस कुन अख कदम तुल यांर्य लागी ।
करिय ऒरय दया भगवान च़ अज़माव ॥



"God attracts everything. The word Kṛṣṇa *means 'all-attractive.' What, then, is wrong with addressing God as Kṛṣṇa?"*

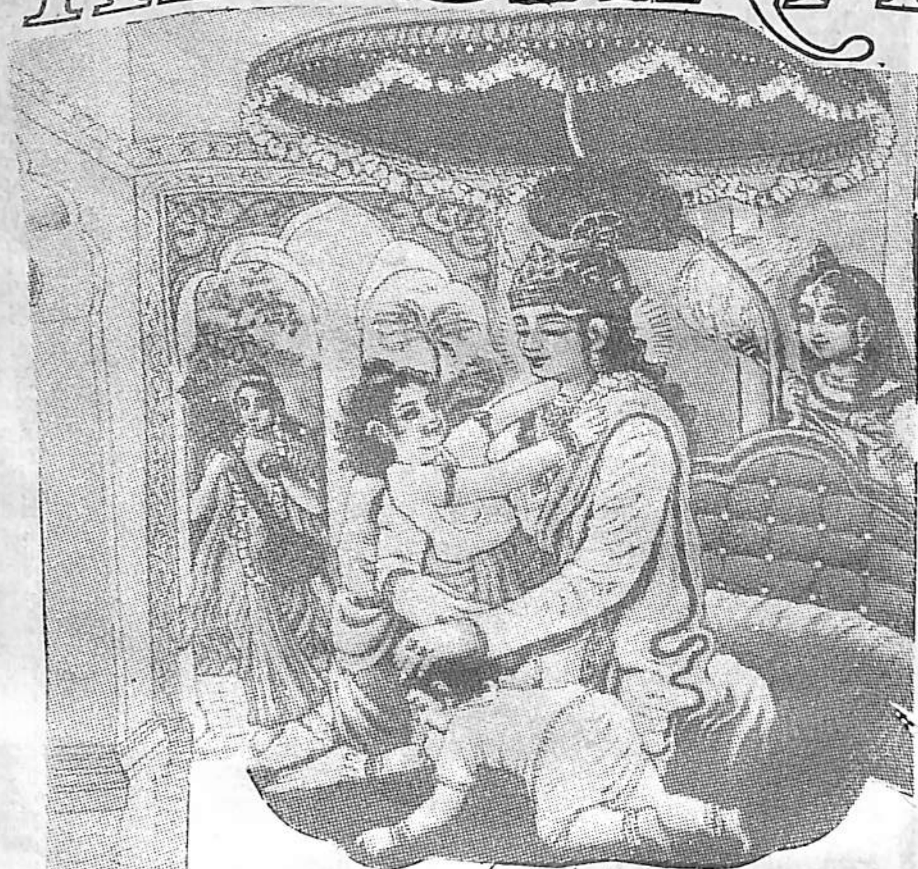
پِتا ماتا: کرشن ۔ ماتا پِتا سُے
گُوروٗ سُے گیان سُے تَے آتما سُے
دِلس شرۄپمُت ۔ اُچھن مَنز جاے تمی سِنز
مُحبّت سُے خلوص پَنز دَیا سُے

पिता माता कृष्ण - माता पिता सुय
गुरू सुय ज्ञान सुय तय आत्मा सुय
दिलस श्रोपमुत अंछन मंज़ जाय तंम्य संज़
महोबत सुय खुलूसुच पंज़ दया सुय ॥



कृष्ण पंज़्य पांठ्य मख़लूकन पनन मोल ।
करान छिस पेंपुरिन्य गथ, तस बरानलोल ॥

KRISHNA



کرشن پنزی پاٹھی مخلوقن پنن مول
کران چھس پونپیرنی گتھ تہ برن لول

This time, Nārada Muni saw that Lord Kṛṣṇa was engaged as an affectionate father petting His small children. (p. 245)

پرزلونٛی دَست وپا چھم سِریہ کرشنس
دِلکی یِم نقشہ ہاؤم سِریہ کرشنس
یِموَ کانٛیاہ حسین پمپوشہ سَر کرِی
یِموَ سِتی تخ سجاوِم سِریہ کرشنس

۱۔ دست = اَتھ ۔ ۲۔ پا = کھور ۳۔ تخ = تخت

प्रज़लवुन्य दस्त पा छिम श्री कृष्णस
दिलुक्य इम नक्शि हांविम श्रीकृष्णस
यिमव 'कांत्याह् ह्सीन पंपोशि सर 'कंड्य
यिमव सूत्य तख सजांविम श्रीकृष्णस




His Divine Grace
कृष्ण मधुर तान छेड़ते हैं

خوبصورت

خوبصورت سانہ آنگنی ژاو تے

گوپین ڈیو تو کرشن سون آو تے

کرشنہ ڈیو ٹھم ژھایہ روس زن ماہتاب

شاہہ ژھاین سر یہ ہیو نوٗن دراو تے

ہیون دل اوس دار روس، دردو انہ روس

اچھی اندر پر ژھنے کوٗرن ٹھہراو تے

تو رستی اوند پوکھ گرک کوٗرنم نہال

ہن پرسن چھم۔ دل برن چھم چاو تے

ذکر پیٹھ تے فکر پیٹھ کرنم دیا

ہیانہ غفلژ ہند ہیوتن ماناو تے

کرشنہ ! ونیتھم تیوت رژی رژی سیر گوس

توتہ دوٗ پتھم ییتھنہ روزی گراو تے



खूब सूरत सानि आंगु'न्य चाव तय ।
गूपियन द'ष्य तव कृष्ण सोन आव तय ॥

कृष्ण बचूठुम छायि रो'स जन माहताब,
श्याम् छायन सिरिय जन नो'न द्राव तय ॥

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाज़' रो'स ।
यथ्य अन्दर प्रछनय को'रुन ठहराव तय ॥

नूर सात्य ओ'न्द पोख गरुक को'रनम निहाल,
मन प्रसन्न छुम दिल बरान छुम चाव तय॥

ज़िकिर प्यठ तय फ़िकिरि प्यठ को'रनम दया,
म्यानि गफ़ल'च हुन्द ह्योतुन मा नाव तय॥

कृष्ण ग्युतथम त्यूत र'टय र'टय सेर गोस,
तोति दोपथम "युथ न रोज्यम ग्राव तय ?"

یوہ ژھورم، اوہ کرشنن گوہ تس
بس کُنی کتھ : کرشنہ گارن ییراوتے
کرشنہ سمرت کرتہ چشمو ڈیشہن
یوّد نہ باور چھے ذرا آزماو تے
بانسری کن کن تھوّوم منزل سوّرم
فاصلا اسہ انگن مینہ گو صحراو تے

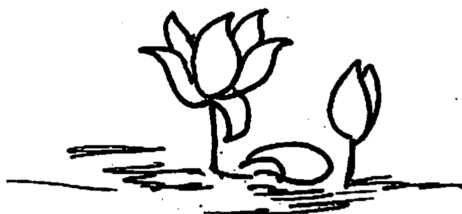
شہکار

ہیہ گو بیدار بخ . از گوم بیدار بخت
وُچھم دیدو کرشن تس سرپہ انہار
سہ گوّرُت وہ ستہ کارن پوزصنم ہیو
دِتُن زگتس پنُن اکھ حسن شہکار

योर् छोरुम और् कृष्णन गोरनस।
बस कुनी कथ—कृष्णु गारुन प्राव तय॥

कृष्ण स्मरन करत' चश्मव डेशिहन।
योद नु बावर छुय़ जरा अज़माव तय॥

बांसुरी कुन कन थोवुम मंज़िल सुरुम।
'फ़ाज़िला'! आंगुन म्य गव संहराव तय॥





म्य गव बेदार बरुत अज़ गोम बेदार।
वुछुम दीदव; वुछुम तस सिरियि अनहार,
खुदा सावन कृष्ण गोर सोंच कंथ्य कंथ्य।
दितुन जगतस पनुन अख हुसनि शाहकार॥

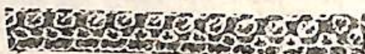


میرایہٕ بیٹھ کرشنہٕ دیا

پرمیشر میٚرا سو گیانٕچ کنی ہتال
جلوٕ ہاوِتھ بختہٕ بڈٕ کرتھن نہال
بالہٕ کرشنا! تس یہٕ پرٛزٕ ھنے دِتھ زِ گوکھ
تِی دِتم چھے پننہٕ عظمژ ہند سوال

ژٕہ یامتھ کھوٗلتھم ستھ دٔرشنکی بَر
کھوٗرن تَل وۄچھ ہیہ صحرا، کوہ تہٕ سَنگر
مکانکی تے زمانکی حلقہ ژھوٗٹ گام
چھُہَم نا کرشنہ گوپالا ژٕ یاوَر

चे यामत खूल्यथम सथ दर्शनकि बर।
खोरन तल वुछ ह्य सहरा, कुह त संगर
मकानुक्य तय जमानुक्य हलक छोट्य गाम
छुहम ना कृष्ण गोपाला। ह्य यावर॥



मीरायि प्यठ कृष्ण दया

प्रेमु हुंच मीरा स्व ज़ानुच कुन्य मिसाल,
जलवु हा विथ आरकुच करथन निहाल।
वालु कृष्णा तस यि फिकरस दिथ चु गाश
ती दितम ह्य पनुनि अज़मच हुन्द मवाल।



भक्तिमती मीरापर कृपा

چانہِ پریمُک زونگ یمِس لوگ سور گو
سِریہ مَن پرٛوون زٕژن ہند نور گو
لَن ترانِی پرانہِ سمیچ ریت آس
قورِ سیتی میرایہِ انگ انگ طور گو

चानि प्रेयमुक ज़ोंगं येंमिस - लोंग सूर गव,
सिर्यायि मन प्रोवुन ज़ुचन हुन्द तूर गव ।
लन तरांनी प्रानि समयिच रीत ग्रांस ,
कोर्व् सृत्य 'मीरायि' ग्रंग ग्रंग तूर गव ॥



میٚون دِل اوس دارِ روٗس دَرواز روٗس
اَتھی اندر پرژھنے کوٗرُن ٹھہراوتے

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाज़ रो'स।
अंथ्य अन्दर प्रछ़नय को'रुन ठ़हराव तय ॥

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो मास, दो नैना मत खाइयो, पिया मिलन की आस ॥

ॐ सत सत ॥

Love at first Sight

خاندر

شُبیہہ کرشُنَن وُچھُم دھرتِی بنیُل گو
اُچھَن تَہندِس شُبیہس ستِی میُل گو
وجُودُک وِیژ تھوُوم بَس آیتَن تَسی
کرشِن پرُووُم مِہ کیُت خاندر مُژھیُل گو

(مِیرا)



۱۔ شبیہہ = فوٹو
۲۔ دھرتی = زمین
۳۔ ویژ = جائیداد
۴۔ مُژھیل = شگفتگی
۵۔ آیتن = حاضر
۶۔ پرُون = حاصل کرُن

शबीह कृष्णुन वुछुम धरती बुन्युल गोव,
अछुन तंहदिस शबीहस स्त्य म्युल गव ।
वजूदुक व्युच थोवुम बस आयितन तस्य,
कृष्ण प्रोवुम म्य क्यत खांदर संछ्युल गव ॥

کاگا سب تن کھائیو۔ چن چن کھائیو ماس۔ دو نینا مت کھائیو۔ پیا ملن کی آس



شُری کَرَن پۆزا پَزٕیک اِظہار یٖ
کرٛشنہٕ بھگتن شُرلِہ مَنٛز تام کار یٖ
زاہدا! یِتھنٕے کرٛشنُن دَرشُن دِوان
دِل کرُن مۆصُم۔ دِیٖ اُدھار یٖ

शुर्य करन पूज़ा—पज़्युक इज़हार यी,
कृष्ण् भक्तन शुलि मंज़ ताम कार यी।
ज़ाहिदा ! यिथिन्य कृष्ण दर्शन दिवान,
दिल करुण मोसूम दि्यी ओधार यी ॥



ییمیس پُرشس زنم ییو وپھرو تہٕ پانس
رُٹن لُگی گرشتنہٕ وتھ ووتا مکانس
چھُسے یہ لبٔ گُنہٕ اگر وہٕ سنز کل
ینی پمپوشہٕ سرٕ انگ انگ تہٕ پانس

۱ انسان
۲ باگوان
۳ قسمت
۵ سر=جھیل

مساوات ییہ وہ یوگی ہے افضل جسے ہو سب ایک سلگے دوست لے لاگ حباب نیک

پرن گیتا تہٕ کرشنُن داس سپدکھ
سورن گیتا تہٕ کرشنٕنۍ ماے پراوکھ
کری ہیُل کرشنٕ لالس ستۍ سمرن
سمر گیتا۔ سمر کرشنا مہ کڈ تھکھ

परुन गीता त कृष्णुन दास सपदख
सोरुन गीता त कृष्णन्य माय प्रावक
करी म्युल कृष्णलालस सूत्य स्मरण
स्मर "गीता" स्मर "कृष्णा" मकड थख

यैमिस पुरुषस ज़नम प्यव फ़ूच़ पानस,
रंटुन कुन्य कृष्ण वथ वोत लामकानस।
छुयय प्रालब्द गंनिर अक्रूर संज़ कल,
वंनिय पंपोशि सर अंग अंग चैं पानस॥

नोट -

वल=गंड, मुशकिल



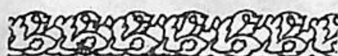
भक्त रसखानपर कृपा

رسہ خانن گورنکھ کرتھس دیا[1]
لولہ والین کرتھ دیا کینہہ کم چھیا
نابہ کارہ چھس۔ مگر چون داس چھس
کرتہ داسس پیٹھ تہ ازہ ہرچ لگا

[1] مہربانی

یَمِس پیٹھ کرشنہ مہاراجَن دیا کرُ
بہ آسانی تمِس ناو ساگرس ترُ
حیاتی تہنز پیٹھ جیوَن تہ حاران
سُہ وانسَن زِندہ رُود پہاون عُمر ژُر

य!मस प्यठ कृष्ण महाराजन हया 'कर
ब आसानी तमिस नाव सागरस 'तर
हयाती तिहिंजि प्यठ जीवन ति ह'रान
सु वांसन ज़िंद रूद प्रवन उमर च़र



रसखानस टोठ्यव दया

रस खानन गोरनख क'रथस दया,
लोल्'वाल्यन किच़ दया कैंह कम छया ।
नाव्'कारा छुस. मगर चोन दास छुस,
करत दासस प्यठति अज़ म्यहर्'च निगाह ।।



भक्त विल्वमंगलपर कृपा

گُپالَن بلوٗمَنگل کوٚر یہِ خوشحال
تمِس اوس کرٛشنہٕ سمِرن حال تےَ قال
اوَے کرنووُنَس منزل سواگت
چھُ کوتاہ رُت دیالوٗ کرٛشنہٕ گوپال!

یِمَو لُہرِو پۆزرُک قصرِ شاہی
تِمَو کُر پانہٕ سۭے آخر تباہی
کرٛشن مہراج وۆتھ اُدھار کورنَکھ
چھُ کوتاہ جان بھگوَن یا اِلٰہی!

ئ्यिमव लुह्रोव पज़रुक कसरि शांही,
तिमव कर पानसुय आंखुर तबांही।
कृष्ण महाराज वोंथ उधार कोरनख,
छु कोताह जान भगवन या इलांही!

गोपालन बिल व मंगल कुरुय खुशहाल,
तमिस ओस कृष्णु स्मरण हाल तय काल।
अवय करनांव्यनस मंज़िल स्वागत,
छु कोताह रुत, दयालु कृष्ण गोपाल!!



फलवालीपर कृपा

میوٕ واجینی بختہ بُڈ اکھ نازنین
کرشنہ سمرن اوس تس پۄزٕ اتہ دین
پترتھ میوس منز دنیتھ گو تس کرشنہ رنگ
ہوونس تمی موکھ پنن۔ کوتاہ حسین

چھ کِرداہُک تھزر وِ یوٗد کرشنہِ بھگتس
تمِس گیانچ تٔپِش پانَس اَندَر مَس
چھِ اَوگُن تَس نِشے یِژ دوٗر یِژ دوٗر
تھوان بھگوَن پرُش یُتھ سُتی پانَس

छु किरदारुक थज़र व्योद कृष्ण भक्तस,
तमिस ज्ञानुच्य तपिश पानस अन्दर मस,
छि अवगुण तस निशे यच़ दूर यच़ दूर,
थवान भगवन पुरुष युथ सूत्य पानस ॥

मेव वाज्यन्य भक्त वॅड़ अख नाज़नीन,
कृष्ण स्मरण ओस तस पूज़ा तु दीन।
अथ मेवस मंज़ द्रांठ्य गव तस कृष्ण रंग,
होवनस तम्य मुख़ पनुन कोता हसीन ॥



سوٗر داسس، کرشنہ! بخشتھ گیان دھیان
تشنہ ہردن گوٚسہ عرفان باگران ۲
کیاہ گژھی کم یوٗد مہ تے ساگر گرکھ
لکھ مہ منزی بیتھ اسہہ تارس ترآن

کَرَکھ یودٕ کرشنٕ سودا، کُن پنُن دِل
مگر سودا بنُن دوٗن منٛز چھُ مشکِل
کَرِی ما اوٚر بھگون بَخت بیدار
مُلے کَر کرشنٕ بھگتی بن ژٕ فاضِل

करख योंद कृष्ण सोदा 'कुन पनुन दिल,
मगर सोदा बनुन दुन मंज़ छु मुशकिल।
क़री मा ओर् भगवन भक्त बेदार,
मुलय कर कृष्ण भक्ती बन च़ फ़ाज़िल॥



सूरदासस ओ'नुथ गाश

सूरदासस कृष्ण बनुथ ज्ञान ध्यान,
तश्नु हृदयन गो मु इरफ़ान बा'गरान।
क्याह गछी कम योंद' म्यते मागर करख।
नुख म्य मंज्य युथ ओस'हन तारस तरान॥



श्रीकृष्ण-चरण

کرشنہ اچونے نقشہِ پا چھُم شوزُ مَن
چھس اَوے کنہ دین ودھریح وتھ سولن
یُ کرَان لچھ منزلن ہتہ وتھ گُڈُم
چھیکرس چھس پانہ از منزل بَنَن

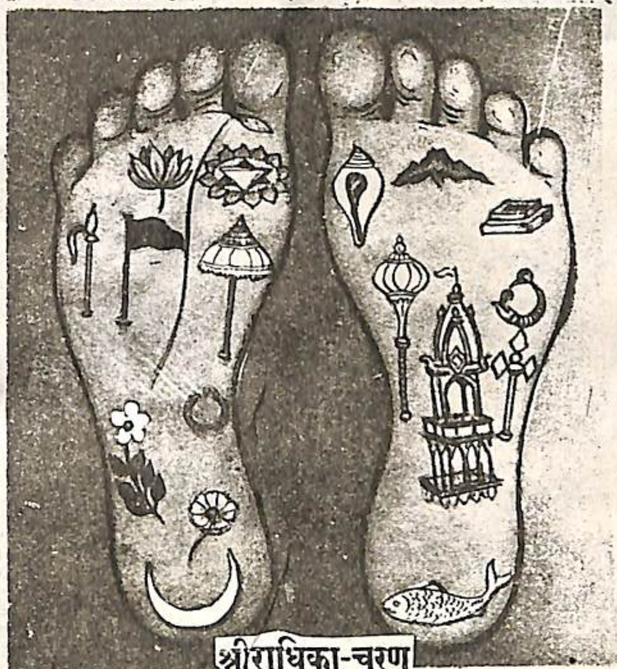
شری کرشنٕنی چرن سادھن کلس پیٹھ
مگر یارس چھلان پنٕنیو اتھو کھور
یہ کرنس منز تٔمِس حاصِل پرسنتا
یہ گو پریمک خلوصُک آخری حد

نوٹ :- ۱- یار : سدآما جیس کُن اِشارٕ ۲- پرسنتا : خوشی ، مسرت ۔

श्रीकृष्णन्यचरण सादन, कलस प्यठ,
मगर यारस छलान पनुन्यव अथव खूर।
यि करनस मंज़ तॅमिस हॉसिल प्रसन्नता,
यि गव प्रेमुक, खुलूसुक आखरी हद ॥




कृष्णु! चोनुय नकशि' पा छुम अूच़ मन,
छुस अवय किन्य दीन्' धर्मुच वथ स्वरन।
यी करान लछ मॅंज़िलन हुंज़ वथ कॅड्डुम,
छेकरस छुस पानु अज़ मॅंज़िल बनन॥


श्रीराधिका-चरण

رادھاچھ آمژ کرٛشنہٕ وَلو ڈالہٕ اَنِن زان
پرٛتھ منزلس پیٹھ زانہٕ وٕنِن باگہٕ دِتِن گیان
محروم پھرٕشَن بانہٕ دیَن دیُت نہٕ بخش دِل
تِم گاشہٕ تَش یِژ دور پھیمتی اَکی تہٕ پریشان

پمپوشہِ پاد

ڈالِہ شوٗبیا میون دِل موٗرلی دَرَس
بس یوٚہے پمپوش پھوٚل میانِس سَرَس
دِل چھُ دِل : پمپوشہِ پادَن ہُند عکس
ڈٲلؠ گذراوِتھ کھوٚرن میوٗٹھہ کَرَس

पंपोशि पाद

डालि शूब्या म्योन दिल मुरलीदरस,
बस योहय पम्पोश फोल म्यानिस संरस ।
दिल छु दिल पंम्पोशि पादन हुन्द अक्स,
डाल्य गुज़रांविथ खोरन म्यूठा करस ॥

राधा छि श्यामुच कृष्ण वतव, डाल मंनिन ज़ान
अथ मंजिलस प्यठ ज़ानुवुन्य न बागि दितुन ज़ान
महरूम पुरुषण बानु, दयन द्युतु नु बखशुन दिल,
तिम गाशिनिश येच दूर प्यमति अंन्य तु परेशान



گیٚشیمِس بالکَس نِش نٕرٛوَن شٕرِیان
پٕرِی چھا! خوٚر چھا! اوتار انسان
اُچھن وُنہٕ مَل، ڈیکَس ژٕندرٕم موٚکھَس گَہ
پہٕ وُچھتے کامہٕ دیوٚس ہوٚش رٕدان

سِری کرشنا ! مَنُک وِیُژ باوَفا دِم
پِتا ماتا چھُہَم پرٛیچھ دَیا دِم
یَمَن سیانِن گُوَن پھِر امرِتُک سَگ
اَمی سِتی زنمہ پھیُر کاسُم بَقا دِم

श्री कृष्ण ! मनुक व्युच बावफा दिम
पिता माता छुहम प्रमच्य दया दिम
यमन ध्यान्यन गुणन फिर अमृतुक सग
अमी सूत्य जन्म फुयर कासुम बका दिम

येशेमिस बालकस निश जून शरमान
परो छा ! हूर छा ! अवतार इन्सान ।
अछन वुजमल, ड्यकस चन्द्रम मुखस गाह
यि वुछथ्य कामदोवस होश रावान ॥

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ।१६।
अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ।१७।
अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ।१८।



● سُمی توٕی گوٚبیوٚ شالِمارٕ ہے ترٚو

بالہٕ کرٕشنُس کرٚو پوٚشہٕ پُوزاہ

پوٚشہٕ پُوزا کرٕتھ لولہٕ شبداہ پرٚو ۔ بالہٕ کرٕشنُس کرٚو پوٚشہٕ پُوزاہ

بالہٕ کرٕشنُس کرٚو پوٚشہٕ پُوزاہ

———— - ————

۱۹. کبھی خون کرتی نہیں آتما ۔ کبھی خود بھی مرتی نہیں آتما

न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो

روُپ میون اوس مَن ہِمی سِتی نار زَن
زَمہَریرکۍ پاٹھۍ شیہلوو سوچنَن
تَن حَرارت۔ مَن چھ گیانچ ژینہ وَنی
ژینہ وَنی گیانچ دِژِم مورلی دَرَن

रूप म्योन ओस मनहंमी सत्य नार ज़न,
ज़मह़रीरक्य पांठ्य शेंहलोव सोंचनन।
तन ह़रारत-मन छु ज्ञानुच चेनवन,
चेनवन ज्ञानुच दिचुम मोरलीधरन॥



(वनुवुन

सम्यतवी गूपियव शालमार हय तरव,
बालकृष्णस करव पोशि पूज़ा १
पोशि पूज़ा करिथ लोलु शब्दाह परव
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥
य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्।

گوکلس ساری سے زتنہ زولہ کرو۔ جایہ جایہ ہے کرو ژھندر مس سال
پریمہ سریہ بانسری لولہ تھاکن برو
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

اُلفیتچ موریتھ ہیتھ شریرس گرو۔ لولہ والین ڈیوییتھ برن مالے
مایہ ہوت اکھ قدم تل ژھوچھ مامرو
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

ماٗلہ لوگ پربتس ہیتھ ہن مازرو۔ سارنے دل تہ شل اچھ لوشان
گبونہ لج آبہ جوی۔ نترنہ لگیم سرو
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

حسنہ آکاشہ کنی لعل و گوہر جرو۔ تارکن فاضلا شولہ پرا گاش
دیوین گوژھہ ونن پانہ از تراورو
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

गूकुलस सांयंसय ज़ितिनि ज़ूलाह करव,
जायि जायि हय करव चन्दरमस सान।
प्रेयम स्नेह बांसुरी लोलु थालन बरव।
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

उल्फतुच मूरथा यथ शरीरस गरव,
लोलुवाल्यन दमिव यथ बरिव माय।
मायि हेत अख कदम तुल चु वुछ मा मरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

मेलु लोग परबतस पथ ब्युहुन मा ज़रव,
सारिनय दिल तु शिल अज़ छि तोशन।
ग्यवनि लंज्य आबु जुय नचनि लंग्य यिम सरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

हुसनु आकाशि किन्य लालु गोहर जरव,
तारकन 'फाज़िला' शोलि प्रागाश।
दीवियन गोछ़ वनुन पानु अज़ त्रावि रव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥



جے جے!

مَنس مَنز گرزان بانسُری ہنز ہوٗدر بے
یہ لے بالہ کرشنا چھ چانی زبہ جے جے
پیزِ یک آلوہ گو وَنن منز پیا پے
یہ چانی چھ بُڈ مہربانی زبہ جے جے
دوٗدُک شریہہ تہ امرت چھ کھاسِین برَن نے
چھ اتھ سلسبیلچ روانی زبہ جے جے
ہوکھسن پیٹھ گلاب پانہ پرمی زبہ چھے دے
نہ کنہہ چھے برابر نہ ثانی زبہ جے جے
دُیی کُم گژھتھ پانہ منزل گژھان طے
یمے گوٗن کرَان پاسبانی زبہ جے جے

۳۱- مہاراج کیشو میں اب کیا کہوں کہ آثار بدھیں برسے دین شکل

जय जय

मनस मंज ग्रेज़ान बांसुरी हुंज़ मोंदुर लय,
यि लय बाल् कृष्णा छें चा'नी चें जय जय।

पज़्युक आल्वाह गव वनन मंज पयापय,
यि चांनी छें ब'ड मेंहरबांनी चें जय जय॥

दो'दुक स्तेंह त् अमृत छें खास्यन बरान नय,
छें अथ सलसबील् च[1] रवांनी चें जय जय॥

मोखस प्यठ गोलाब पान् प्रेमी चें छुय दय,
न कांह छुय बराबर न सा'नी[2] चें जय जय॥

दुयी कम गंछिथ पान् मंज़िल गछ़ान तय,
यिमय गुण[3] करान पासबांनी[4] चें जय जय॥

नोट : 1. सोरगुक सर 2. चे ह्यु व 3. सिफत
4. र'छ

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव । न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥ न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च । किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा । येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च । त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ।



رادھایہ وۆنۍ تۆ شایہ گٹن ژھایہ کرشن جی

درشن چھ ہاوان پانہ کمیو تراپہ کرشن جی

تھۆنۍ نقشہ بنی بنی گاشہ بتھس غاز برہمن گو

لولس تہ ہردس سر یہ چھ سرایہ کرشن جی

یتھ جایہ لۆکن مایہ لبۆرت شریہہ تہ سمت خوۍ

صۆلح چھ وایان بانسری تتھ جایہ کرشن جی

یتھ کرایہ آتش نار تزر تہ لیشہ ہنین لوگ

تتھ کرایہ گنگا آبہ شہل سایہ کرشن جی

فاضل اچھ تس تس باگہ تھزر لانہ سبزر تس

یس پر یمہ سانے تیر نظر لایہ کرشن جی

۳۴۔ پدر بھی ہیں دادے بھی استاد بھی پسر بھی ہیں اور ان کی اولاد بھی

राधायि वनिव शामु गटन छायि कृष्ण जी,
दर्शुन छि दिवान पानु कम्यू त्रायि कृष्ण जी॥

थंन्य नक्शि वैनिथ गाशि बुथिस गाज़ ब्रमन गव,
लोलस तु ह्रदयस सिरियि छु सरमायि कृष्ण जी॥

यथ जायि लुकन मायिब्रोंत श्रोह तु समुत ख्योंथ
सुलहुच छु वायान बांसुरी तथ्य जायि कृष्ण जी॥

यथ कायि भातश नार तचर त्रेशि हत्यन लोंग,
तथ कायि गंगा त्रायि शुहुल सायि कृष्ण जी॥

"फाज़िल" छु बखतस बागि थज़र लानि स्यज़र तस,
यस प्रेमसानुय तीरि नज़र लायि कृष्ण जी॥

नोट —

त्रायि=नहजि २ गाज़—पोड़र
३ व्युच—सरमायि

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा ॥
एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन ।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥३६॥





لے (مُورلی ہنز لے)

یام شہ دیت کرشنہ اوتان نئے
جے ہری کوّر زگتہ سمسارن دئے
اَزتہ زأَنتھ یا نہ زأَنتھ کہ بہ گہ[1]
کُلہ شیئ حے تھوٗکھ کن تتھ لئے

---

[1] لُس کہنہ چیز زِند چھُ مثلن حیوانات، نباتا تہ جمادات بیتر۔

۳۷- یہ دھرت انسر کے جو فرزند ہیں یہ یادھو سب اپنے جگہ بند ہیں

॥३८॥ कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम्

کرشنہ مورلی پرتھ زمانس منز وزان
یم چھ بوزان تم چھ بارنی ہوی بنان
یا الٰہی یوت تاثیر چھا شہس
تفرقک ول حل چھ اقوامن گژھان

कृष्ण मुरली प्रथ ज़मानस मंज़ वज़ान,
यिम छि बोज़ान तिम छि बारन्य हिव्य बनान।
या इलाही ! यूत तासीर छा शॅहस !
तफ़रिकुक वल हल छु अकवामन गछ़ान ॥

याम शह च्युत कृष्ण अवतारन नये
"जय हरी" को'र जगत संसारन दये ।
अज़ ति जा़निथ या न जा़निथ गहबेगह[1]
"कुल्लुशयुनहय"[2] थॅविथ कन तथ लये[3]॥

नोठ । 1 गहबेगह— कुनि कुनि विजि
2 'कुल्लुशयुनय'— यि छाह जिन्दह छु
3 लये— प्रावाज

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् । कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥३९॥

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।

स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥ यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।

تَلا بانْسُرِی تُل!

گُبؔلا! پھولَن گُل ۔ ذَرا بانْسَرِی تُل
ژٕ پیارٕ اچھ بُلبُل ۔ ذَرا بانْسرِی تُل!

ژٕ پریمک تہٕ لُولک مُجسّم مُجسّم
فِدا چھی ژٕ کَم کَم ۔ ذَرا بانْسرِی تُل!

نَبَس پیٹھ سُلِی کوٗرٕ تمنّا سِتارَو
قَدم تھوٗ قَدم تھَو۔ ذَرا بانْسرِی تُل!

ژٕ پَرتَو مے تروٗوتھ مگر ژھایہ ژھایہ گٔیے
گُجس چانہٕ ماے ۔ ذَرا بانْسرِی تُل!

۱۔ ذرا = ہَنہٕ   ۲۔ نَب = اَسمان   ۳۔ تمنّا = شوق   ۴ پَرتَو = جلوہٕ

बाँसुरी तुल

गुपाला ! फोलन गुल, ज़रा बांसुरी तुल,
चें आरान छि बुलबुल, ज़रा बांसुरी तुल।

च प्रेयमुक त लोलुक मुज्ज़सम मुज्ज़सम,
फ़िर्वा छो चें कम कम, ज़रा बांसुरी तुल।

नवस प्यठ सुली कोर तमन्ना[2] सितारो,
कदम थव कदम थव, ज़रा बांसुरी तुल।

चें परतव[3] प्य ओवुथ मगर छायि छाये,
गंजिस चानि माये, ज़रा बांसुरी तुल॥

नोट :— 1. कोरबान 2. :— वफ़ा 3.— अलव

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥ अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः ।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥४१॥
संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च । पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥

گٹن منز ہر یہ گو یتو گاشرو وُلی
اُچھن ہیلتو مُلی، ذرا بانسرِ تُل!

یمن گوپین منز ژٕ یہ موٗرلی دِتھ شَہ[1]
تِمو کوٚر دُیُ لۂ[2]، ذرا بانسرِ تُل!

ژٕ بالگ اَو سَتھا ژٕ یہ شوبھا چھ عظمتھ
ژٕ گنج حقیتھ، ذرا بانسرِ تُل!

کُنِش ہِش کُنِش چھے ژٕ یہ اتھ بالہ پانس
ژٕ مرکز[3] جہانس، ذرا بانسرِ تُل!

دَیاہ سانہ بیہتو اَسہ تھٲو اَز لوٗتھ[4] دِل
چھُ فاضل ژٕ یہ ہاٲیل، ذرا بانسرِ تُل!

۱۔ شہ: پھوکھ ۲۔ لۂ: لہٕ: لاَ: اِنکار ۳۔ مرکز: اوٚہوٚکھ ۴۔ لوٗتھ: لوتھ دوتھ

गटन मंज हुरचर गव यितो गाशरो वॅल्य,
अ'छुन मेलतो म'ल्य, ज़रा वांसुरी तुल।

यिमन गूपियन मंज़ चें मोरली दितुथ शह,
तिमव कोर दुयो लहं[1], ज़रा वांसुरी तुल।

च' वालक अवस्था, चें शोबा छय अज़मथ[2]
च जगत'च हक़ीक़त, ज़रा वांसुरी तुल।

क'शिश हिश कॅशिश छय चें अथ वाल पानस,
च मरकज़ जहानस, ज़रा वाँसुरी तुल।

दमाह सानि वेहतो, मे थोवमय लिविथ दिल,
छु 'फ़ाज़िल' चें मायिल, ज़रा बाँसुरी तुल॥

नोट :— 1. इनकार 2. बजर



مَنزلی پاتھ

آلہِ ۔نابَد ۔ زہِر ۔ بادَم چھیکیو
لولہِ بُرتیو کرِشنہِ لالو اَز ولو
دَرشُنک وٲنسَن مہہ رُودُم آرزو
لولہِ بُرتیو کرِشنہِ لالو اَز ولو

ہَی تہ یمبرزَل تہ جافری تے گلاب
یاسمن، پمپوش، وِری کُیمبہ، آفتاب (گلِ آفتاب)
یم دیَن کُری پادہ تم گُل لاگیو
لولہِ بُرتیو کرِشنہِ لالو اَز ولو

دُوسرا ادھیائے

بسن جے نے کہا

اجو ارجن کا دیکھا یہ رنج و ملال غم و سوز دل میں طبیعت نڈھال

प्राल, नाबद, च़ेर, बादाम, छिकयो
लोलु बर्यंत्यो कृष्णु लालो ब्रज़ बुलो।
दर्शनुक वांसन में रुदुम आरिज़ो,
लोलु बर्यंत्यो कृष्णु लालो ब्रज़ बुलो॥

ही तु यम्बरज़ल तु जाफ़ुर्य तय गुलाब,
योसमन, पम्पोश, विरिकैम्य आफ़ताब,
यिम दयन कर्य पोंदु गुल तिम लागयो,
लोलु बर्यंत्यो कृष्णु लालो ब्रज़ बुलो॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥
कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥
क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥

ہیانہ وآران سینہ کِہن پنجرن اندر
اَکھ دیچ کوٹھرچھ پھٹمژ زن کھنڈر
چانہِ بایتھ چھم رلوتھ ٹھوکہ ہیہ دوو
لولہِ بُرتیو کرِشنہ لالو اَز ولو

سِریہ ہو کھ ژندرم ڈیکس تارکھ جُرتھ
ہرنہِ چشمن زن ژہہ چھے امریت بُرتھ
دِل چھوہ لیم گاہے ژہیتم روبرو
لولہِ بُرتیو کرِشنہ لالو اَز ولو

چانہِ وبرے گو کلکی منزل ژھنڈم
وُنی دِرتم جمنایہ بھٹی بُھٹی پے ٹھوم
دراصل چھم لس ہہ چونے جستجو
لولہِ بُرتیو کرِشنہ لالو اَز ولو

ارجن کا جواب

۲۔ وہ بولا کہ اے فاتح دشمناں مدھو نارن! مجھ سے یہ ہو گا کہاں۔

म्यानि वांरान सोनुश्यन पंजरन अन्दर,
अख दिलुच कूठरछि फुटमुच् जन खण्ड़र।
चानि बापथ छम लिविथ थवमच् मे-दो,
लोल् बर्यत्यो कृष्णु लालो अज् वुलो ॥

❀

सिरियि मुख चंन्दरम ड्यकस तारख जंरिथ,
हरणु चशमन जन चें छुय अमृथ बंरिथ।
दिल फ़ोल्यम गाहे चु बिहतम रोबरो,
लोल् बर्यत्यो कृष्णु लालो अज् वुलो ॥

❀

चानि वेरे गूकलक्य मंज़िल छ़ंडिम
वंन्य दितिम जमनायि बठ्य २ पय, पंविम
दर असल छुम बस मि च्योनुय जुस्तजो,
लोल् बर्यत्यो कृष्णु लालो अज वुलो ॥

नोट— १ आबे हयात २ तलाश ।

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।
इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥४॥
गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके ।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥
न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम-
स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥



سالہِ ہیتو!

کِرشنہِ گوپالہِ! دماہ سالہِ ہیتو   رسرِیہِ میشالہِ دماہ سالہِ ہیتو
میانہِ اماٹر! اچھ مشکل بے رٹیِا   وہ فی کووو ٹرالہِ دماہ سالہِ ہیتو
اِنتظارٕی، بے قرارٕی پیٚر اَلَبَس   رٕہ کُمس کھالہِ دماہ سالہِ ہیتو
یانٕسرِی تُل! ازٕن وسن ہیتھ سلسبیل   اُسی بَرو پیالہِ دماہ سالہِ ہیتو
فاضلن تھوو مَن سجاوِتھ بس ژٕہ کیٚت
ازلٕی کالہِ دماہ سالہِ ہیتو

طبیعت ہے کمزور دل نرم ہے   یہ الجھن ہے اب کیا مرا دھرم ہے

साल यितो

कृष्ण' गूपाल'! दमा साल यितो,
सिर्य मीसाल दमाह साल यितो।

ग्यानि अमार! छे मुशकिल बेरुखी,
वोन्य कवो चाल,दमाह साल यितो।

इन्तिज़ारो, बेकरारो प्रालबस,
राह कंमिस खाल',दमाह साल यितो।

बांसुरी तुल ज़न वसन हथ सलसंबील,
अस्य बरव प्याल,दमाह साल यितो।

"फ़ांजिलन" थौव मन सजांविथ बस चे क्युत
अज़ सुली काल,दमाह साल यितो।

नोट : 1. नसाब, तकदीर, 2. बर्गुक सर

संजय उवाच
एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप। न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥७॥
न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्
यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्॥८॥



ہیہ کُن وچھ

رادھایہ بُرِ ی پیالہِ ژھ گوپالہِ ہیہ کن وچھ!

اَز کالہِ یَزہم سالہِ دَماہ لالہِ ہیہ کُن وچھ!

موٗرلی دِ کینے پُشہ تہ گلَن پھیر پنُن رَنگ

بُلبُل ژھ کرَن یوٗسمَن مالہِ ہیہ کُن وچھ!

تَن نَھنی تہ بُتھس جلوِ، اُچھن سیٚحر دٔکس گہ

زَن سریہ ژھ موصوم کرتھ نالہِ ہیہ کُن وچھ!

۱۔ پھوکھ

۲۔ گاش

۳۔ دائرہ۔ حلقہ

۱۰۔ ادھر فوج تھی اور ادھر فوج تھی دل ارجن کا اور علم کی اک موج تھی۔

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत । सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥१०॥

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे । गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥११॥

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः । न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥१२॥

में कुन वुछ

राधायि बॅरी ख्याल' चे गूपाल' में कुन वुछ
अज काल यिज्यम साल' दमाह लाल' में कुन वुछ

मोरली वि कुनुय शह तु गुलन फेरि पनुन रंग
बुलबुल चे करन यासमनन माल' में कुन वुछ

तन थन्य तु बुथिस जलव', अछन सेहर, ढ्यकस गाह
जन सिरियि चे मोसूम करिथ हाल' मे कुन वुछ

नोट : 1. गाश 2. थालव-थालव (थाल सूत्य)

گوکُل بہٕ نمنتھ شاہہ گٹن ژھایہ ونٛدے زوٗ

یادم تہٕ خنفر، آلہٕ چھکے نھالہٕ مہ کُن وچھ!
از چانہٕ کلے ٹھانہٕ وژھے ہلہٕ ئبرتھ چھم
دامہ ژٕ اگر چھکھ تہٕ بہٕ سنبھالہٕ مہ کُن وُچھ!
دَرواز تھاوے وُتھی تہٕ ژٕ پرتھ جایہ کرے زوٗل[1]
بوٗ خونہٕ جگرٕ ہالہٕ، شمع زالہٕ مہ کُن وُچھ!
لوٗ دلاگہٕ بکرٕی دوٗر[2] تہٕ سئے کیلہٕ مہ وچھو وچھ
کنُہہ وایہ کرن چھمبہٕ، رٹتھ نالہٕ مہ کُن وُچھ!
چھے وگنہٕ گنڈتھ دٔری تہٕ ژٕ گوپی چھ غزلخوان
نہ نُہہ ہرنہٕ کھیلس منزنہٕ دژتھ ژھالہٕ مہ کُن وُچھ!
کم بایہ چھُ فاضل ژٕ سری کرشنہٕ نظر تل
آسُن تہٕ نہٕ آسُن بہٕ ژٕ پنٛتھ گالہٕ مہ کُن وُچھ!

۱۔ زوٗل = چراغاں   ۲۔ بکرٕی دوٗر = گستاخ ۔

गोकुल बं निमथ श्याम गटन छ़ायि वंदय ज़ुव
बादम त् ख'ज़ुर ग्रांल' छकय थाल्[2] में कुन वुछ

अज़ चानि कले ठाम् वछ़ुय मलरि बंरिथ छुम
दामाह चु अगर चस़ त बं सम्बाल् में कुन वुछ

दरवाज़ु थवय व'थ्य तु' चे़ हर जायि करय ज़ूल
बो खूनि जिगर हार' शमह ज़ाल् में' कुन वुछ

यो'द लांगि बुकु़र्य दो'र त् समय गेलि में वुछ-वुछ
कांह वायि करुन छुमन् रटथ नाल् में कुन वुछ

छय विगनि गंडिथ देयं त् चे गूपी छि गज़ल खां
ज़ांह हरन् खेलिस मंज़ न दिचथ छाल् में कुन वुछ

कम मायि छु "फ़ाज़िल" त् श्री कृष्ण' नज़र तुल
आसुम त् नं आसुन बं चे पथ गाल्', में कुन वुछ



देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥१३॥ मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥
यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ । समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१५॥

گُلالہ !

گُلالا ! ذرا بل ! گُپالنیٖ دٕرے چھےَ
جِگر چھِل، جِگر چھِل ! گُپالنیٖ دٕرے چھےَ !

تٕرٕ چھُے داغ سینس، ہیہ دُکھ چھُم دِلس چھُم
یہ مُشکِل تٕہ کر حل ! گُپالنیٖ دٕرے چھےَ !

وۄہ زٕج ناہ بٕر بیہ ہیش تٕہ لاگتھ قبا چھُکھ
شٕہِج زادٕرٕ وَل ! گُپالنیٖ دٕرے چھےَ !

تٕہ بیہ ہسولن منز، تٕہ یادا ئسمت کر
گُنبر اُلفیچ کَل ! گُپالنیٖ دٕرے چھےَ !

گُپالا ! یمن سینہ دٕدی آخ رٕوٕ دِکھ
تُلکھ مَل تلکھ مَل ! گُپالنیٖ دٕرے چھےَ !

۲۵۔ نہیں آتما کو تغیر زوال خواس مہا کو پائیں نہ پہنچے خیال

तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ।२६।

गुलाला !

गुलाला ! जरा वल, गुपालन्य द्रय छय
जिगर छल, जिगर छल, गुपालन्य द्रय छय ।

चें छुय दाग मोनस म्य दुख छुम, दिलस छुम
यि मुशकिल चु कर हल, गुपालन्य द्रय छय ।

वोज़ज नार ब्रेंह हिश चु लोगिथ कवा छुख,
शिहिज चादराह वल, गुपालन्य द्रय छय ।

चु बेंह मसवलन मंज़, चु हासिल समुत कर
गन्यर उल्फतुच कल, गुपालन्य द्रय छय ।

गुपाला ! यिमन सोन द'द्य आख रूदिख,
तुलुख मल, तुलुख मल, गुपालन्य द्रय छय ।



एवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ।२५। अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च । तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।२७।



تھنی ژور ہیمس گور کھیتھ کرشنہ گپالا
تس کھژنہ ڈیکس دژہ تہ دلس گوبہ ملالا
ماتایہ ژہ ووضوبہ ووٗنے لفظ "مکھن چور"
اچھ یتھنہ لگی بالکا! چھکھ حسن کمالا

نوٹ:-
۱۔ تھنی = مکھن ۲۔ گور = گوری بای ۳۔ دژہ کھینی = ملالہ گژھن ۴۔ چور = ژور
۵۔ اچھ لگنی = جسم بد لگنی۔ ۶۔ حسن کمال = Beauty Incarnate

۴۹ سن اب عقل کے یوگ کا حال سن ۔ بہت ایسٹ ہیں جس سے کرموں کے گن

اَنْدَس پیٹھ تِمَے لُکھ مینہ وٲصِل گَرْھان
یِمَن ہُنٛز عِبادَت ـ خلوٗصُک نِشا ن
نَہ تھاوَن طمع، دٟے، نَہ زٕکھ، مَن ہِمی
بُہ تھاوے سوکھس منٛز تِہُنٛد جِسم و جان
(کرشن گیتا ۲۲/۹)

अंदस प्यठ तिमय लुख मे वासिल गछ़ान,
यिमन हुज़ इबादत- खलूसुक निशान।
न थावन तमाह, दुय, न ज़रख, मनहमी;
बं थावय सोरवस मंज़ तिहुंद जिस्मुजान॥

थन्य चूरि यंमिस गोरि ख्ययथ कृष्णु गोपाला,
तस खंच न डचकस द्रूह त दिलस गत्र नु मलाला।
मातायि चे मोसूमु वेनुय लफ़्ज़ि "मखन चोर",
ग्रंछ युथ नु लगी बालुका! छुख हुसनि कमाला।

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः। जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय। बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः॥४९॥ बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।



تھنہٕ ژور

گبو، دوٗد تہٕ گرٛس کیازِ ژٕنہ اندیشہٕ کرتھ چوٗتھ
بھگوانہٕ ! یہندٕ باگہ بوٗرت شٮ۪ہجارٕ لکن دوٗت
زوٗ منگتہٕ، جگر منگتہٕ ژٕ رٕح منگتہٕ دل وجان
ہوٗصوٗمہٕ لگے کیازِ اسی ژورِ مکھن کھیوٗتھ!

۱۔ عقل اندیشہٕ کرتھ = کھوژی کھوژی ۲۔ رٕح = آتما ۳۔ مکھن = تھنہٕ

پرکھ یوٗد کرشنہ لیلا گیان لاری
اہنکارک یوٗہے سیماب ماری
یہ حاصل گوٗی تہ سپدکھ کیمیاگر
یوٗہے گوٗن ساگرن منز تار تاری

परख योद कृष्ण लीला ज्ञान लारी;
अहंकारुक योहय सीमाब मारी।
यि होसिल गोय त सपदख कीमयागर,
योहय गोण सागरन मंज़ तार तारी॥

ग्यव, दुद, त गुरुस क्याज़ि चे प्रदेश करिथ चोथ,
भगवान! युहुंद बागि ओसत शेहजार लुकन वोत।
जुव मंगत, जिगर मंगत, च रुह मंगत दिलो जान,
मोसूम! लगय क्याज़ि असो चूरि मक्खन स्योथ॥

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।

کرٛان پوٗزا کرشن جی دوستانس
ہشر تس نش — ہشر یارس تہٕ یارس

سُداما اَکھ فقیراہ تےٚ کرشن شاہ
مگر وُچھتو یمن دۄن منٛز فرق چھا

وفاداری، دیانت، نیک سیرت
تمامن باگراون پوٗز محبت

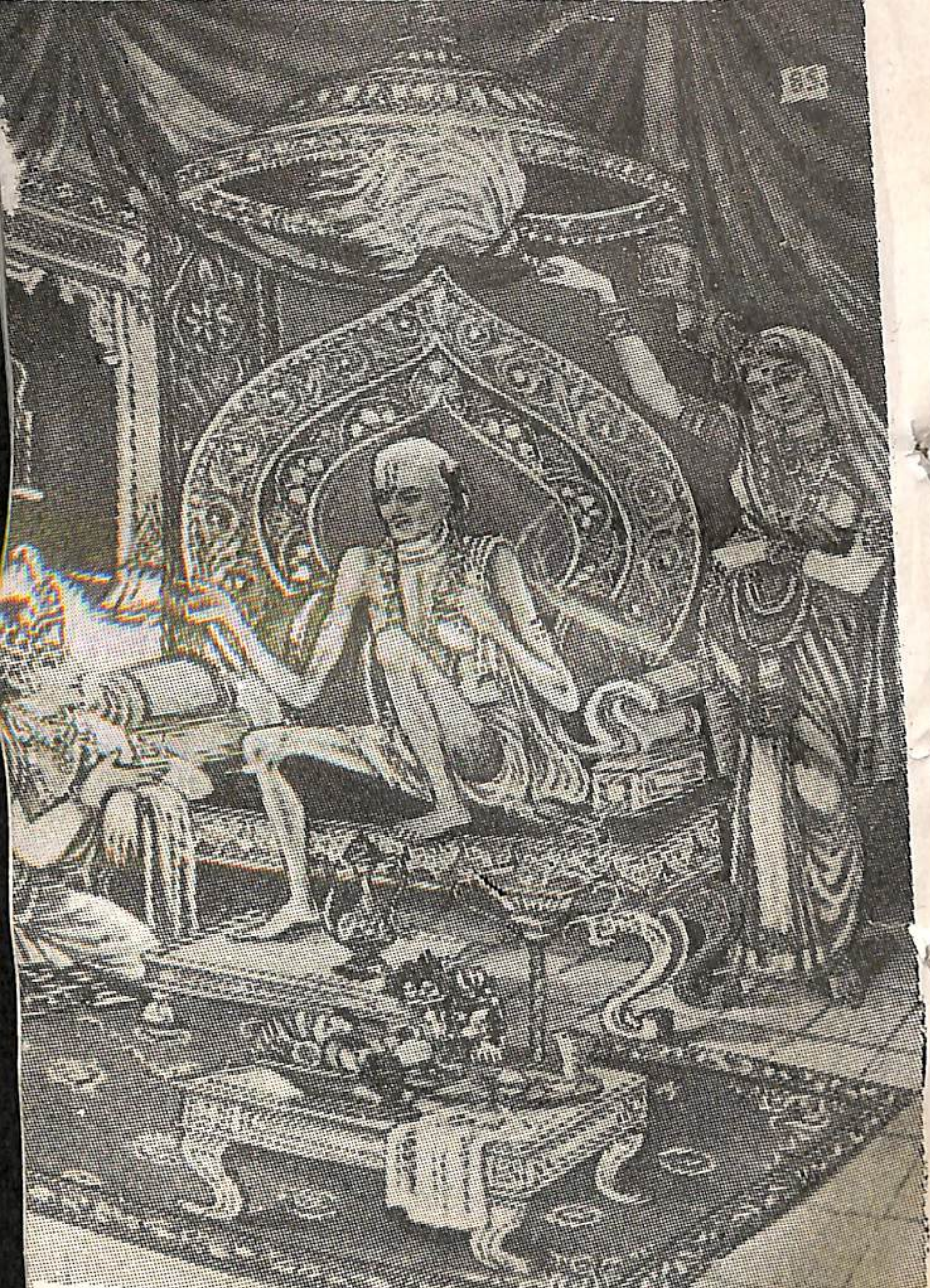
خلوصُک شرٛیہ تہٕ جذبچ جاذبیت
کرشن جی چھےٚ کرٛان داسن عنایت

اَکِتھ کُن نےٚ۔ مہابھارت بیٚیتھکُن!
اَکِتھ کُن تھٔنۍ۔ قتل، غارت بیٚیتھکُن!

چھُ دۄشوٕنۍ منٛز دِوان مکتی سہ لوٗکن
یتھےٚ بخشاں ست آگاہی چھُ بھگوان

بجر گوٚیی تہٕ عرفانُک تھزر یی
تھوان قایِم یتھی گوٗن چھُے کرشن جی

करान पूजा कृष्ण जी दोस्तानस,
हिशर तस निश—हिशर यारस तु यारस।
सुदामा अख फ़कीराह तय कृष्ण शाह,
मगर वुछतव यिमन द्वन मंज़ फ़रक छा।
वफ़ादारी, दियानत, नेक सीरत,
तमामन बागरावान पोज़ मुहब्बत।
खुलूसुक श्रेह तु जज़बुच जाज़िबियत,
कृष्ण जी छुय करान दासन अनायत।
अकिथ कुन 'नय'—महाभारत बियिथ कुन,
अकिथ कुन 'थन्य'—कतुल, गारत, बियथकुन,
छु द्वशवुन्य मंज़ दिवान ओदार लूकन,
यिथय बखशान सत आगाही छु भगवन।
बजर गव ई तु ईफ़ानुक थज़र ई।
थवान काइम यिथी गुण छुय कृष्ण जी।



भगवान्‌ने स्वयं पूजनकी सामग्री लाकर सुदामाजीकी पूजा की।



कृष्ण

کرشن سُداما

کرشن مہراج اکھ بالک اوستھا
مێتر اوس بالہٕ پانک تس سُداما

یمن اوس شرِلہٕ منز یارانہٕ یارز
کران تتھ پیٹھ رشک آس پانہٕ یارز

سُداما عمرِ منز بروٗنہہ کُن پکان گئے
کرشنِ اوتار، تس پیٹھ الیشور دئے

سُداما اکھ گرہستی سادھ بلکل
کرشنِ اوتار: مہراج ماں لکِ کُل

کرشن اوتار گو مشہورِ عالم!
یِوان آسی درشنس تس سادھ کم کم!

- -

کرشن سُداما قصہٕ چھِ پزِ دوستی تہٕ یادا و اُری ہندا کھ تاریخی تہٕ پوشون انیٹو۔

۳۱- ترا فرض کیا ہے کہ جس پر نظر نہ جی ڈگمگا اس کی تکمیل کر

सुदामा



कृष्ण महाराज ग्रख बालक ग्रवस्था
मित्र ग्रोस बाल् पानुक तस सुदामा ।

यिमन ग्रोस शुर्यलि मंज़ यारान्, यारज़,
करान तथ प्यठ रशक ग्रोस पानु यारज़ ॥

सुदामा वुमरि मंज़ ब्रोंह कुन पकान गंय
कृष्ण ग्रवतार तस प्यठ ईश्वर दंय ।

सुदामा ग्रख ग्रहस्ती साद बिल्कुल,
कृष्ण ग्रवतार महाराज मोलिके कुल ।

कृष्ण ग्रवतार गव मशहूरि ग्रालम,
यिवान ग्रांस्य दर्शनस तस साद कमकम ।

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि । धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् । सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥ अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि । ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥

سُداما وۆتھ مُلاقات گوژھ مہ پیدُن!
نصیبس لیکھتھ میانِس کرشنس درشُن!



تیاری کر سُدامن زیٹھِ سفرچ ۔ تُلن سیتی تحفہ؛ پھُٹجہ بیلی تومُلچ پکان گو تھاکھ کڈان گو بڑو نہ پکان گو ۔ کڈان وتھ اُلفتچ زنہ مانْھکان گو
کرشنِ وُچھنک تمنّا تس دِلس پیٹھ
تہِ اُتھی شوقس اندر ووت مُنزِلس پیٹھ
اچانک کرشنہِ لالس گوٚیہ گوٚشن ۔ سُداما از ییم من چھُم مہ توشن"
سُداما آو دربارس اندر ژاو ۔ کرشن مہراج لورِ انہِ تس دراو

رلوایتھ چھہ زِ سُدامس اوس تحفہ پھُٹجہ منز سَر ، یتھ تتہِ چہ علاقائی زبانی منز تنڈُل ونان چھ۔

सुदामा वोथ मुलाकात गोंछ़ में सपदुन!
नसीबस लेखतु म्योनिस कृष्णु दशुन।

तय्यांरी कर सुदामन ज़ेठि सफरुच,
तुलुन सूत्य तोफ़ु फुटजा "बेल्य तोमलुच"।

पकान गव, थक कडान, गव ब्रोंह पकान गव,
कडान वथ उलफतच ज़ांह मा थकान गव।

कृष्ण वुछनुक तमन्ना तस दिलस प्यठ।
तु अथ्य शोकस अन्दर वोत मंज़िलस प्यठ

अचानक कृष्ण लालस गव यि गोशन
सुदामा अज़ यियम मन छुम में तोशन।।

सुदामा आव दरबारस अन्दर च़ाव,
कृष्ण महाराज योग्य अननि तस द्राव,



अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्
संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥३४॥ भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम्॥
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः। निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम्॥

اونَن با شان و شوکت، پُور حشمت - یہ چھُسنا بالہِ پانگ شرہِیہ تہٖ اُلفت

سُدآما کھور کرِشنن پانہٖ تخٕتَس

کراں ساری رشک تَس نیک بَختَس

بیاری تخٕتَس بِہتھ اَوتار وقتُک - بیاری کنی چھُس سُدآما یار وقتُک

اکِس سیتی اَکھ بِہتھ لول باگراوان - یہ ڈیشتھ چھِی وُزیرَن ہوش راوان

سُدامَن بیاکی توہ ہلیچ ڈالی کُڈ نٕنی

کُرن پیش کرِشنہٖ لالس یُس تھنی تھنی



کرِشن لالَس موٗٹھ کنیتھ ساد ہو آو - کھیوان گو "تہہ" کراں آسَس نہٖ ٹھہرو

۲۷- مرے گا تو پائے گا جنت میں گھر۔ اگر جیتا جائے تو دنیا ہو تیرے۔

ओनुन बा शानु शौकत पूरि हशमत ।
यि छुसना बालु पानुक स्नेह त उलफत ।

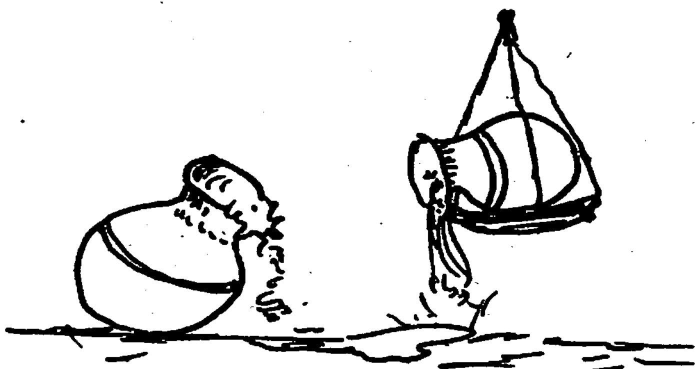
सुदामा खोर कृष्णन पानु तख्तस,
करान सारी रशक तस नेक बखतस ।

यपार्य तख्तस बिहिथ अवतार वक्तुक
हुपार्य किन्य छुस सुदामा यार वक्तुक ।

अकिस सूत्य अख बिहिथ लोल बागरावान
यि डीशिथ छी वज़ीरन होश रावान ।

सुदामन ब्योल्य तोमलुच डाल्य केंड नेन्य
करुन पेश कृष्णु लालस युस थंनी थन्य ।

कृष्ण लालस मोठा रुचत स्वाद खुव आव
ख्यवान गव, माह करान आसस नु ठहराव ।



हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्

کرشن لالن پرزٕ هس سور حال اَحوال ۔ زمین جایُن بٲرزراعت روپیہ تہٕ مال
سُدآماونہٕ لوگ بس ڈولہٕ ہِن چھم ۔ چھ اُتھی منز سُتھ گذاران رات کیوٚدم

سوٚخن زیٹھان کے دفتر بُرِتھ آئے
اَتیتھ پتھکُن نہٕ روزان راز سرسائے



سُدآما کرشنہٕ لاَس سِتی ہمدم
سُدآما تس نہٕ گرباٗرُک کھینٕ غم

سمے کاٗفی گژھان اَتھ کاروبارس ۔ ہوان روٗخسته چھُ آخر یار یارس

نہٕ کوشش تی ہو اُس ہیٚن کوٗی رایگان ، ہو رستے ہیٚن اُس گے رکاوٹ کہان

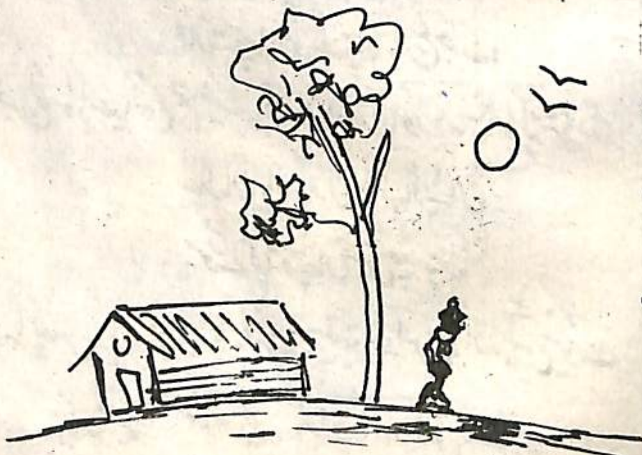
कृष्ण लालन प्रुछुस सोर हाल अहवाल,
ज़मीन, जायुन, ज़िरात, रोपयि तय माल ।

सुदामा वननि लौग "बसडोकुहन छम,
छि अथ्य मंज़ सथ गुज़ारान साथ तय दम"।

सोखन जे़ठान गय दफ़तर बरिथ आय
अत्यथ पथ कुन नु रोज़ान राज सिरसाय ।

सुदामा कृष्णु लालस सूत्य ह्यम दम
सुदामा तस नु गरबारुक कुँहुँय गम ।

समय काफ़ी गछान अथ कारुबारस,
ह्यवान रोखसथ छु आ'खु'र यार यारस ।



बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ।।
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः । वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ।।४२।।
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ।। व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।

کراں رۆخصتھ کرٕشن جی تَس فقیرس ۔ سُدامس ظون زِ شٕری آسن مہ بیکس
بِھران کوتہ سُداما کرٕشنہٕ لاگُن ۔ سوآری بیٹھ کھستھ دراو از گرس کُن

وَزان برَونھہ برَونھہ چھہ سونٕنے دف تہ دُم دُم
وَناں ساری ساری سُداما راجہ ہو چھُم

ولِتھ زَر بفتہ سونہری تاج برسر ۔ سُداما از شہن ہندشہ برابر

گرس کیتھ ووت گامس منز سُداما
خبر کیاہ چھس زِ گامس منز سپُد کیا

وُچھن گامکی کراں تَس پوشپرٛی گَتھ ۔ اُمِس تعظیمہ سان ماوان گرچ وتھ

ہنہ برونہہ کُن یکیتھ ڈیشن عمارت
عمارت چھا! سورگ[2] چھا باغ جنت

خبر لٕج دِلٕ عیالس تم زٕستھ[1] آی ۔ دَوان زن حور غلمان سورگہ منزٕ دراے

سداماں پانہ جاران خواب ڈیشان
یہ سورٕ کیاہ وچھاں چھس چھیسنہ زانان

بہ ما چھُس رووُمت بیگانہ گُمت ۔ ییتیتھ ڈوکُس چھُ از پیلس[3] بنیومت

۱۔ زُستھ = ہچومہ کرتھ ۔ ۲۔ سورگ = جنت ۳۔ پیلس = شاہی محل ۔

करान रोखसथ कृष्ण जी तस फ़कीरस
सुदामस ज़ोन जि शुयं आसन में बेकस।

फ़िरान कोताह सुदामा कृष्ण लालुन
सवारी प्यठ खंसिथ द्राव अज़ गरस कुन।

वज़ान ओंह ओंह छे सुरनय दफ़ तु डुम डुम,
वनान सारी सुदामा राजि ह्युव छुम।

वेलिथ ज़रबफ़ त' सोनहंर्य ताज बर सर,
सुदामा अज़ शहन हुन्द शाह बराबर।

गुरिस क्यथ वोत गामस मंज़ सुदामा,
खबर क्याह छस जि गामस मंज सपुद क्याह

वुछिन गामुक्य करान तस पोंपरिन्य गथ,
अमिस ताज़ीम सान हावान मरुब वथ।

हना ओंह कुन वंकिथ डीशान अमारथ
इमारथ छा! स्वर्गं छा! बागि जनथ!

खबर लेज वंल्य अयालस तिम चंसिथ आय,
दवान जन हूर गिलमान स्वर्गं मंज़ द्राय।

सुदामा पानु हारान खाब डेशान,
यि सोरुय क्याह वुछान छुस केंह नु जानान।
(कुस)

ब' मा छुस रोवमुत बेगानु गोमुत,
येत्यथ डोकस छु अज़ पैलस बन्योमुत।

क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥४३॥ भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्।

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।

وچھن آشینیٚ بہتھ منٛز محلہٕ خانس
کرٲنۍ پوٗزا، برٲنۍ لول کرٛشنہٕ لالس



سُدامہٕ پُچھس دِپان آخرٕ یہ کمۍ کوٚر؟ - یہ کمۍ پرٛشن ہیٚہ پرٛژھنے لول یِتھ بوٚر؟ وُڈھس آشینیٚ "امی کرٛشنن یورُم اوٚل - وندلس شری باتٕ ہالین مول تے موج عمارت، باغ، اندر، فرشِ مخمل - تمی کرٛیہٕ عنایت لوٚت جَل جَل کرٛشن بیس بیٹھ کرٲن چھے مہربانی - یِہٕنان سوٗن ہیرٕ لوٗن انسانٕ فانی

वृछिन माशन्य विहिथ मंज़ महलु स्वानस,
करान पूज़ा बरान लोल कृष्ण लालस।

सुदामा छुस दपान मोख़ुर यि कम्य कोर?
यि कम्य पुरशान में प्रछुनय लोल युथ बोर।

वंछुस माशन्य "अमो कृष्णन बोरुम लोल,"
बन्दस शुर्य बाच़ मालुन मोज तय मोल।

ममारथ, बाग, मन्दर फर्शि मखमल,
तमी कर यिछ् मनायथ यून जलजल।

कृष्ण यस प्यठ करान छुय मिहरबानी,
बनान सुन हेरि बुन इन्सानि फ़ानी।

اَکھ سُدٲما چھا یٚمِس پیٹھ کٔرِ دیا مولی دٲرن
اَکھ دِلہٕ چھا یتھ نہٕ بسکیٖن دٔر تٔہندِ کنول چٔرن
یُودٕ یژھکھ پانَس اَندر تھاوُن کرٛشن پراوُن کرٛشن
شرطِ اوّل اتھ مقامس چھے بٕنٛج رٔنٛچ لگن

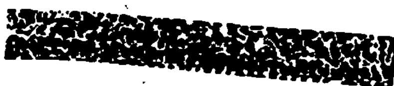
अख सुदामा छा येमिस प्यठ कर दया मोरली दरन
अख दिला छा यथ नुं बसवीन दर तहंद्य कंवल चरन
येदि यछुख पानस अन्दर थावुन कृष्ण प्रावुन कृष्ण
शर्ते अवल अथ मकामस छुय मनुच, र्‍हैचलगन।



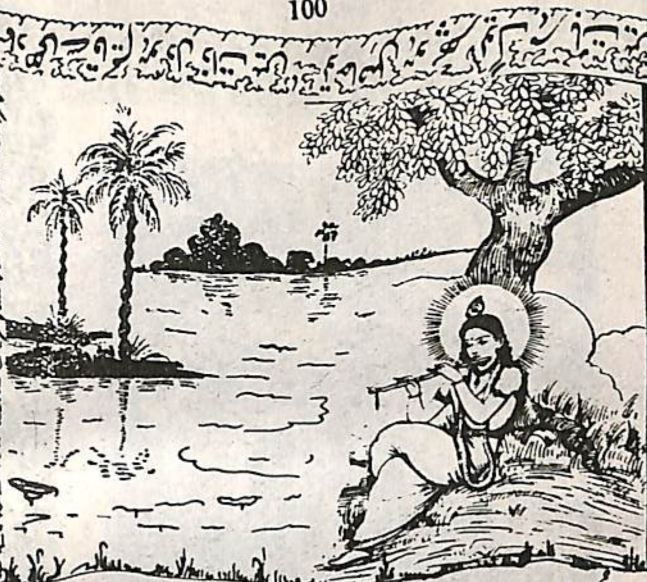
کرشن گو دوٚن سمت گرٛزھنک سمندر
اوٚتھ وأتھ بنان پرٛتھ قطرٕ ساگر

غریبن مُفلسن ہُند مال گوپال
یمن کوچھ تھر تمن ہُند لال گوپال
یمن زنمس اندر پیترن پیوان یچھ
تمن پُرشن سیٹھا رُت فال گوپال

ग़रीबन, मुफ़लिसन हुंद माल गूपाल ,
यिमन कोछ ठ्रर तिमन हुंद लाल गूपाल ।
यिमन ज़नमस अन्दर प्यतरुन प्यवान यछ़,
तिमन पुरुषण स्यठा रुत फ़ाल गूपाल ॥



कृष्ण गव दून समुत गछ़नुक समन्दर
ओतथ वातिथ बनान हर कतर सागर ।



گُلن ہُند سُمُکھ پھانپھلاوان کرُشن جی

عجب گُلستانہ بناوان کرُشن جی

یمَن آسہ پرِتریچھ تہٕ پرٛریچھ دلس چھہ

تمن امرِتکی پیالہٕ چاوان کرُشن جی

کرِستانیٔ، پارسی تہٕ ہِندی، سِکھ، مُسلمان

نظر کُنی یمن ییٚتھ چھ ترٛاوان کرُشن جی

دوہ دس ہشیکرس منز تفاوت[۱] یشارہ

ہشر آدنک چھے رلاوان کرُشن جی

۱- فرق

۵۲- جو ہو عقل آزاد جنجال سے نکل جائے تو موہ کے جال سے

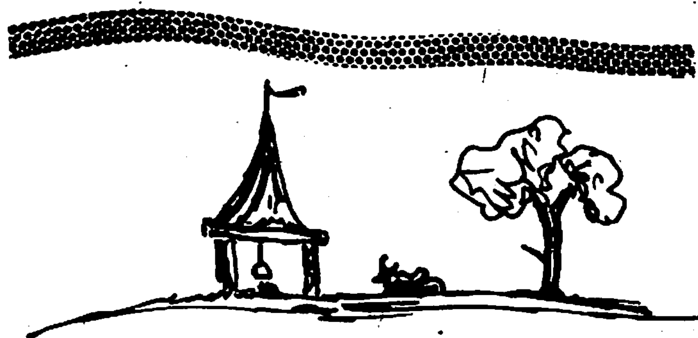
कृष्ण जी

गुलन हुंद समुत फांफुलावान कृष्ण जी
अजब गुलिस्ताना बनावान कृष्ण जी।

यिमन आसि प्रेयमुच त पज़रुच दिलस छिह
तिमन अमरितुक्य प्यालु चावान कृष्ण जी।

किरस्तान्य, पारस्य त हेन्द्य सिख मुसल्मान
नज़र कुन्य यिमन प्यठ छु त्रावान कृष्ण जी।

दोदस शेकरस मंज़ इशारा तफावत
हिशर आदनुक छुय रलावान कृष्ण जी।



यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥

अर्जुन उवाच
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥

دُئی ہُند زہر ، تفریح زھیٹ الاَیش

چھ مورلی بجاوِتھ مِٹاوان کرشن جی



کتھن منز تھر زچھس تہ مورلی اثر چھس
زلن یم نہ زنہ تم زلاوان کرشن جی

یہ متھرا ، یہ جمنا ، یہ گنگا ، یہ رادھا
سمے گو مگر تو تہ گاران کرشن جی

رسیہ ہرد والیو تمس نش شو زر لوٗب
کھوٗٹس کیمیا چھے بناوان کرشن جی

بران لول گوپی تمس شوزِ شانے
تمن منز چھہ دوہ دِن گزاران کرشن جی

شری بھگوان کا ارشاد ۔ سُہ مرکب دوہ یمہ ستی کھوڈ دُعاتسون چھہ بنان

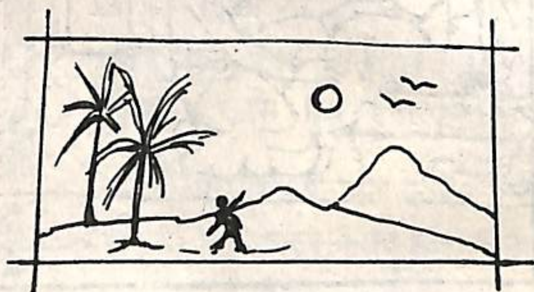
दुई हुंद ज़हर तफ़रुकुच छ्टेट अलांयिश,
छु मुरली बजोविथ मिटावान कृष्ण जी।

कथन मंज़ कथर कुस त मुरली असर छुस
रलन यिम न ज़ाँह तिम रलावान कृष्ण जी।

यि मथरा, यि जमना, यि गंगा, यि राधा,
समय गव मगर तोति गारान कृष्ण जी।

सियाह हृदयि वाल्यव तमिस निश शोज़र लोब
खोटिस कीमिया छुय बनावान कृष्ण जी।

बरान लोल गूपी तमिस श्रोचि शाने,
तिमन मंज़ छु दोह द्यन गुज़ारान कृष्ण जी।



श्रीभगवानुवाच
प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥५६॥

ییمِس آسہٕ وَس زاعمٕز لولہٕ نارَن ہے

بلاشکھ تمِس پیرزٕ ناوان کرٛشن جی

لچھس حب وچھس منز چھ تس شولہٕ ناوان

بہیاباں ذٕرس چھے بناوان کرٛشن جی

یمو پونپرٕ نِ گتھ کرٕس سرِیہٕ پانس

تمَن چھے پننٕ جلوٕ ہاوان کرٛشن جی



مٔنٛز رٔستی نظر لوٚز آنہٕ ہاوان۔ کرٛشن جی سُداما سُداما کرٛشن جی

۵۸- ذرا سا بھی دبے کوئی چھوئے کو چھیڑ تو لیتا ہے فوراً سب اعضا سکیڑ

ہوٗلی

ازٕ چھہٕ سنسارٕکۍ پُرش ہوٗلی گِندان
فطرتُک انگ انگ رَنگن مَنز رنگ بَران
کرشنہٕ! یکھنا لُکھ چھہٕ آیتۍ وولسنس
سارِنۍ روٗحَس اَندر موٗرلی گرزان

अज़ छि सन्सारकय पुरुष होली गिन्दान
फित्रतुक अंग अंग रंगन यंज़ रंग भरान
कृष्णु! यिखना लुख छि आमुत्य वोलसनस,
सारिन्य रूहस अन्दर मोरली ग्रज़ान

यमिस आसि वस ज़ाजिमच् लोलु नारन
बिलाशक तमिस परज़ुनावान कृष्ण जो।

लछस हुब, वछस मंज़ छु तस शोलुनावान,
बयाबान ज़रस छुय बनावान कृष्ण जी।

यिमव पोम्परिन्य गथ करिस सिरियि पानस,
तिमन छुय पनुन जलवु हावान कृष्ण जी।

मन्'च रास्ती नज़रि पो'ज़ ओन्'हावान
कृष्ण जो सुदामा, सुदामा कृष्ण जी।

॥५८॥
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥
यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः। इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः॥
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।



تُسُند سرٛپہٕ پَشَن، وٕڑونین، وحشیٖن تام
ژھیناہ چھا تِمَن یِم چھُ پالان کرٛشن جیٖ

حُسد خوٗن ہار، خشمہٕ ہوٗت نار ژرایان
چُھ زِگُتک زِگت وہ ٚنی ژ ٚہ پیاران کرٛشن جیٖ

یِمَن تاپہٕ کرٛالوٗ چھ ہیٛژ شورٕ کرٛمژ
تِمَن سیکہٕ لِن پیٖچھ چھُ باران کرٛشن جیٖ

چھٔلِتھ ژھن یِمو کام، کرود، موہ، اہنکار
پوٚہتر تِمَن جانِ جانان کرٛشن جیٖ

۱۔ شہوت ۲۔ ژکھ ۳۔ طمع ۴۔ غور ور ۵۔ سرپہٕ = پیاد

۶۱۔ حواس اپنے رول اور لگا مجھ میں دل تو سرشار ہو یوں میں

तसुन्द स्रेहे पशन, वुडवुन्यन, वहशियन ताम,
छ्यनह छा तिमन यिम छु पालान कृष्ण जी।

हसद खूंखार, खशम होंत, नार चापान
छु ज़गतुक ज़गत वोन्य चें प्रारान कृष्ण जी

यिमन ताप क्रायव छे मेंच़ शोर करमच़
तिमन सेंकिल्यन प्यठ छु बारान कृष्ण जी।

छेंलिथ छुन यिमव काम, क्रोध, मोह अहँकार,
पवितर तिमन जानि जानान कृष्ण जी।



सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ॥

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥



یمَن کنہہ نہٕ آسان یمَن دِل پریشان تمَن بیکسَن ہُنٛد چھُ سامان کرٛشنِ جی

یہٕ تھُنی ہیوٚ مُجسّم چھُ حُسنُک جمالُک
چھُ فاضِل دِلس منٛز بساوان کرٛشن جی



۶۲۰. جو کرتا ہے محسوس دنیا کی سیر، نہ الفت کسی سے ہے جس کو نہ بیر

چھ برہمن دھرم-گیان ضبط راستی
لبنۍ- حق شناسی تہ پاکیزگی
تغوفل ترک- عیش و عشرت حرام
طمع ژکھ نہ تھاوۍ چھلنۍ من ہمی
کرشن (گیتا ۱۸/۴۲)

छ ब्राह्मण धर्म—ज्ञान जब-त रास्ती,
लबुन्य हक़ शनासी तु पाकीजगी
तगोफुल तरक ऐश व इशरत हराम,
तमाह, चख न थावुन्य छलुन्य मनहमो
(गीता)

यिमन कांह नु आसान, यिमन दिल परेशान,
तिमन बेकसन हुंद छु सामान कृष्ण जी।
यि थंन्य ह्योव मुजस्म छु हुसनुक जमालुक
छु फ़ाज़िल दिलस मंज़ वसावान कृष्ण जी।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति॥६४॥ प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते॥६५॥
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना। न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्॥



بانسری ہُند ساز گومیانن کَنَن
چھُس اَوے کِنی کرشنہ شبدن کَن تھوَن
کرشنہ شبدو، بخشہُم گنگایہ جل
تھہ ژھنم اَتھہ منز گوٗرم شوٗد تن بدن



نوٹ:- ۱۔ شبد = لفظ ۲۔ بخشہُم = دِیُتم ۳۔ جل = آب، پوٗنی ۴۔ شوٗد = خالص



مہربانی کُرے کرشنن سُداما! ۔ ژ چھکھ زگتس اندر لوڈ نیک بختا
بنان چھا یُتھ دیالو یار یارس ۔ چھ کرشنن دوستی امرت سراپا

मिहरबांनी करय कृष्णन, सुदामा !
च़ छुख जगतस अन्दर बोड नेक बख्ता
बनान छा युथ दयालु यार यारस
छि कृष्णन दोस्ती अमृत सरापा।

बांसुरी हुन्द साज़ गव म्यानन कनन
छुस मवय किन्य कृष्णु शब्दन कन थवन।
कृष्णु शब्दव बख्शुहम गंगायि अश,
याह छूनिम मन मंज कोरुम छोर तन बदन

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते।



بالہِ پانٔس لگی تنٕے اَز ہیون آے

نٕزٕ وَندَے! ہوٕرلی تلا اَز کرٕشنہٕ وٲے

چانہِ حُسنک پٕرتوَہ دیدَن کٔشِش

چون پیکر جذبہ : پُرتٕھچ رٕسریہ کرٕاے

چاٲنی حشمَت، چاٲنی عظمَت، چاٲنی کتھ۔ کنہہ نہٕ سَمیٚس منٛز ژٕہ ہیٚوٕ یُی ساٲنی رٲے

عظمت = بحر   سۄہ = وقت

मोरलीदर

बालु पानस लंग्यतनय अज़ म्योन आय,
ज़ुव वन्दय ! मोरलो तला अज़ कृष्ण वाय ।

त्रानि हुसनुक परतवा दोदन कँशिश
चोन पयकर जज़वु प्रेयमुच सिंयि काय ॥

चान्य हशमत, चान्य अज़मथ, चान्य छब,
कांह न समयस मंज़ त्रे ह्यु व यी सान्य राय ।

(१) आय---वाँसि हुंद त्रख, (२) परतव—जलव,
दोद – अछ,

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥ विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ॥
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति । स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥

چانہِ موٕرلی ہُنز درے! اَوتار ژِے

داس پیارٕں چھی ژٕ از کاسُکھ انیاے

اکھ دمہ چشمَن اَندَر کر تم قرار !

عُمرِ لوسَم ژٕنی وُچھان کرِ ہیون پاے

ژٕ ے چھُہم پیرِیمک صَنَم، رُوٗحک ہرشِ

سارِ نے لول باکرا وُن چون داے

یُوت ژوٗر سو ندَر بناوِتھ چون موکھ

حاآرتن گو پانہ کاریگر خوداے

ساسہِ بُدی رنگ بدٕلونی روٗدِم زَنم

یَس نٕروٗس مَنز چھُکھ بُستھ سے اکھ ہواے

چانہِ پُترَیج چھُہ مَنَس لُجمِ ہُیہ چھُم

لولہِ برٕتیو ! فاضِلس چھے چانی ناے

پاے = چارہ

ہرشِ = سردار

داے = مشہور

ناے = پریم

شری بھگوان نے فرمایا

ساتویں ادھیائے

ایسن ارجن! اماں مجھ پائے ہوئے نامری ذات ہیں لو لگا...

चानि मोरली हुंज़ द्रंय अवतार चय,
दास प्रारान छी च अज़ कासुख अन्याय ॥

अख दमाह चश्मन अन्दर करतम कगार,
उमर लोसम चेंय वुछान कर म्योन पाय।

चय छुहम प्रेयमुक सनम, रूहुक हर्ष,
सारिनय लोल वांगरावुन चोन दाय ॥

यूस चोंर सोन्दर बनांविथ चोन मोख,
हारतन गव पानु कांरीगर खोदाय।

मासवंद्य रंग बदलुनुन्य रूदिम जन्म,
यस जुवस मंज़ छुख बेंसिथ सुय अख बेवाय ॥

चानि प्रेयमुच छिह्य मनस लंजमुच मे छम,
लोलु बेत्यों। 'फ़ोज़िलस' छय च्यांन्य माय।

(१) प्राय---वांसि हुंद त्रख, (२) परतव—अलव,
दोद – अछ,

(१) पाय—चार, (२) हर्ष— सरूर,
(३) दाय—मशवर, मोख—बुथ, (५) माय—प्रेम,

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥१॥
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥२॥
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥



یَکدِلی ہُند شہِ گیان چھے بانسُری
یَس کَنَن گوٚو تَتھ لوٚگ جَے ہری
مَن یوٚم پتھ یَس سَپُد بَس سُے چھُ شاہ
کیاہ مُسلمانی کرِ تَس کیاہ کافری

کُنی یَس نظر تَس چھ گیانی وَنان!
تمِس نِش نہ چنڈال، برہمن زٕ جان!!
دُیٔ ہُند سیٹھاہ دُور احساس تَس!
سُہ گاو، ہوٗن تے ہوٗس چھ یکسان وِندان

(گیتاجی ۵/۱۸)

گیتا ۵/۱۸

कुनी यस नज़र तस छि ज्ञानी वनान
तमिस निश न चंडाल, ब्राह्मण ज़ जान।
दुई हुंद स्यठाह दूर इहसास तस,
सु गाव, हून, तय होस छु इखसान व्यंदान
(गीता)

यकदिली हुंद शाह ग्यवान छय बांसुरी
यस कनन गव वननि लोग "जयजय हरी"।
मन पवितर यस सपुद बस सुय छु शाह,
क्या मुसलमांनी करयस क्या का'फ़िरी ॥

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः । सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ।३१।

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।

यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।



بالہِ پانس لاگہے جامے چھُتی

کرشنہٕ لالو! بس ییتی سمکھہٕ تتی

پانہٕ از گنگا یہ ہندٕ جل بأگراوٕ

چاوتکھ اَمرِت مہہ ہوی تہریشے ہتی

یم نِشاطس، شالمارس پوس پھُلی

ژٲری ژٲری تم لاگہے کارے ہتی

یہ مٹی یہ پانی یہ آگ اور ہوا یہ آکاش دُنیا یہ چھایا ہوا

وجودک سر منچ روشن سبیل بن
ذرا ظاہر مشر۔ اندری دِلس سن
کرن آور پنن آسن نہ آسن
دِلچ حرکت بناوُن کرشنہ سمرن

वजूदुक सिर, मनुच रोशन सबील बन
ज़रा ज़ाहिर मशर, अन्दरी दिलस सन ।
करुण आवुर पनुन आसुन नं आसुन
दिलचि हरकथ बनावुन कृष्ण् स्मरण ॥



कृष्ण लालो

बाल् पानस लागह्य जामय छेती,
कृष्ण् लालो बस येंती समखक तंती ।

पान् अज़ गंगायि हुंद जल बागराव,
चावनस अमृथ म्य हिव्य त्रेशे हेती ॥

यिम निशातस शालमारस पोश फोल्य,
चांयं चांयं तिम लागह्य कारे पंती ।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च ।

A/1

نُورٕ آگُر سِریہ ہو کھ چھے اَنہٕ پوٹ
ہیرِ لوٗن پانَس پٔرٕوَن ہِندی گھہ دُتھِ

خورٕ شُنٛد ہیکہٕ تہٕ تھٔنی ہیوٗ چھُے شریہ
نالہٕ رٕٹہٕتھ اَکھ دَمہٕ روزتم اَتی

چون آکار چھُم سَتَن بَرنَن ہہ آش
یِم شعوٗرٕکی بَرٕ دوٗہے تھوٗی مے دِتھِ

دِل چھ بھرسٹ تے کرودھ اَز سمیک سُبھاو
بیر اَکھ اَکی سُنٛد تھٔوان سمیکی مُتی

چھی فِدا پادَن ہِمتی ہمپوشہٕ سَر
کھٕبل چھ آسَن ہیتھ بٕہتھ آلے کِتی

اَکھ ہُنٛز ہوٗ رٕلی دٕرن آدیش لوٗز
فاضِلا! سَت دوٗپ چھ دٲسَن ہُنٛدی پیٚتی

नूर् आगुर- मिर्यामोख छुम ग्रोन् पोट,
हेरि बोन पानम प्रवन हुन्द्य गाह वेथो ॥

हरि हुन्द पैकर तु थन्य ह्यव छुय शरीर,
नालु रटुहथ अख दमा रोज़ुम अंतो ॥

चोन आकार छुम सतन वरन्यन मे आश,
यिम शऊरुक्य बर दोहय थव्य मय वेथो ।

दिल छि भ्रष्ट तय क्रोध अज समयुक सोवात्र,
वैर मल अवयसुन्द थवान समयिवय मंतो ॥

क्रो फ़िदा पादन गोमुत्य एम्पोशि सर,
ल्यब छि भासन ह्यथ बिहिथ आरग्र कंतो ।

"अख बनिव" मुरलो दरुन आदेश पोज़,
फाज़िला ! सत दोप छु दासन हुन्द पंतो ॥

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय ।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥७॥
रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥८॥
पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥९॥



رادھا ونان چھ ناتھس۔ دود بانچھ ہیو ژبہ پیکر
درشن میہ کالی دِکھنا! چھم چانہِ دورِرُک شر
اچھ ہیانہِ لوسہِ وانس۔ گنگا بہ بلبھ ژبہ پیاران
مورلی شبد گرھان چھم۔ گوشن ژبیتھ بُتھس تر
اندی اندی ژبہ رقصہِ باپتھ۔ گمی مورکھیول انتھ تھوو
یم چانہِ لولہِ پیرتھ۔ رنگین پیرَ تہِ زیوَر

۱۔ دورِیر = فراق ۲۔ گوشن = کنن ۳۔ زیور = گہنہ

۱۰۔ سُن اے ارجن میں ہوں بیج ہر ہستی کا ہیں وہ بیج ہوں جو نہ ہو گا فنا۔

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये । मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ।।१२।।



राधा वनान छें नाथम—दुद, मांछ ह्युव चें पैकर
दर्शुन में काल्य दिसना! छुम चांनि दूरिरुक शर ।

प्रंछ म्यानि लोसु वांसन— गंगायि प्यठ चें प्रारान
मुरली श्वन्द गछ़न छ्रिम गोशन चुं यथ बंटिस तर.

छ्रन्द्य मंन्द्य चे रकसु वापथ कंम्य मोरु स्योंल प्रंनिथ थोंव
यिमचानि लोलु पूरिथ रंगीन पर तु ज़ेवर ॥

बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।।१०।। बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।

نَے

(نے چھ بہانے .... "مورلی شبداہ اَسہٕ گوکنٕ وَنَن چھ رادھا کرشنہٕ ہے آو۔)

گُس تام وایَان! اُلکھ چھ دیان نَے چھَ وزان نَے
گوپالہٕ ژٕ یم ویدی چھ دیان
نے چھَ بہانے ---- نَے چھ بہانے

تصویر آتش خانہ مجازٕ س چھُ دِوان ڈول
مَنز نارٕ بَرہٕ ہَن طورٕ سنگرُ
تو دَزان نے ---- نَے چھ بہانے

نَے نغمہٕ شیرینی۔ مَن چھُ بَرمان۔ زو چھُ زوان کَل
یتھ نغمہٕ بَراَوُ معرفتُک
سرہیہ چھَ بران نے ---- نَے چھ بہانے

۱۳۔ گنوں سے ہوئے وصف تینوں عیاں ہوئے جن کے سے گمراہ اہل جہاں

(नय छ वहानय

"मुरली शब्दा गव असि कनन
वनन छि राधाकृष्ण हे आव"

कुस ताम वायान लुख छि दपान नय छि वज़ानय,
गूपाल चे यिम वेंथ छि दपान,
नय छि वहानय—नय छि वहानय

तसवीर आतशख़ान् मजाज़स छु दिवान डोल
मंज़ नार् श्रेहन तूर् संगर
तोति दज़ान नय—नय छि वहानय

नय नगमु शीरेंनिमन छु अमान, जुव छु जुवान कस
युथ नगम् प्रावुन मायंफतुक
श्रेह छे बरान नय—नय छि वहानय ।

تِیتھ گیانٛ حاصِل یَدِ ، تھوٗکھ زانٛی اندر مَن ۱ علم

سوٗی زان تاوِتھ اوم تہٕ کُنے

ھُو۲ چھ پٔران نے ---- نے چھ بہانے ۲ ایشور

زَن سوزِ وَنس زوٗنگ چھ لگان، لامُ لگن لام جنگلس

مَن وِہنہٕ لگان تاوِہتین

شولہٕ زٔٹان نے ---- نے چھ بہانے

وَن سوٗر گرٕ ھتھ لدوزِ ہُٹاہ، ژوٗرِ بہتھ لوٗب

تُھی یانہٕ تھلان وٗالِہ توٗے

آسِہ گرٕان نے ---- نے چھ بہانے

فاضِل! شریک ساز کُنے، سوز ہگر ہیوٗن

گوپالہٕ! لوٗہے لولہٕ ہتین

منٛز چھ سٔران نے ---- نے چھ بہانے

त्युथ ज्ञान हासिल सपदि यवस जुन्य अन्दर मन
सुय ज्ञान हाविथ ओइम तु कुनुय
'हू' छुं परान नय—नय छे वहानय।

ज़न सोज़वनस जोंन छु लगान लाम लूकन लाम
मन वुहनि लगान ताव हत्यन
शोलु छ़टान नय—नय छि वहानय।

वन सूर गंछ़ित रोज़ि हंटा चूरि विहिथ लोव
तथ्य पानु थलान वालि तवय
आस मरान नय—नय छि वहानय।

'फाज़िल'! शरीरुक साज़ कुनुय सोज़ मगर क्योन
गोपालु! योहय लोलु हत्यन
मंज़ छे सज़ान नय—नय छे वहानय।

नोट— ग्यान—जानकारी, अकल
हू—ईश्वर, अल्लाह।

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।



مہ چھا اِنسکار، ماتا! کیاز پرزٕ ھتھم

مہ لے گوہی گاو ماتا ستی ہر دم

دوٗ پتھ دوٗد ماسہ چھ تھم ژوٚر ژوٚرے

ہتے پوٚز بوز تے ملرے تہ لوٚرے

دوٗدکی ژٕڈی چیتھ تہ لوٚزم کل ہیہ اتھکن

یوٚہے گوٹھانہ ووٚتھ بھگوانہ سُند دِین

نبی تہ اوتار چھینہ اپرہسکان ونتھ تمن ہنزن کتھن۔ تہ کامین منز چھ شوزرہ آسان۔

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते । वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥१९॥ कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥



पोंज़ अवतार

मैं छा इन्कार माता! क्याजि प्रुछथम
मैं लय गोय गांव मातायि सूत्य हरदम ।

दोपुथ दुद मा सां चोयम चूरि चूरे
हतय फेंज़ बोज़तय मलरे तु टूरे ।

दुदुक्य नटच बथ ति रूज़म कल म्य मय कुन
योहय गव ठानु वोथ भगवानु सुन्द ग्रुन ।

پزر گو سریہ چھا پوشیدہ رۄزان
کرشن لۄز وننہ چھانہ نہہ کانسہ کھۄژان؟

نہج پزرچ یہ رۄزان وانسہ پابند
لوکٹ بالک اَمی کوٚرت عقلمند



یہ دھرتی گاو ماتا پیٹھ چھ تۄشان
دوان دۄد تھنی کرشن آخرہ بناوان
کھۄان تھنی امریتکی نیٹ داہہ چاوان
امس جگ ایشور یدوی چھ دیاوان



पज़र गव सिरियि छा पूशोद् रोज़ान
कृष्ण पोंज़ बनुन छा ज़ांह कांसि खोचान ?

नंहंज पज़रुच न रोज़ान कांसि पाबंद
लूकुट बालुक प्रेमी कोंरमुत अकलमंद ।

यि धरती गांव माता प्यठ छि तोशान,
दिवान दुद, थंन्य, कृष्ण प्रांखुर बनावान ।

ख्यवान थंन्य अमृतुक्य नटच दामु चावान
प्रेमिस ज़ग ईश्वर पदवी छु द्यावान ।

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ॥ अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः । परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥२४॥

کرشن اکھ بالکا پزرک مجسّم

فخر زگتس یوہے اوتار۔ آدم

کرشن بتراٰژ بیٹھ صلح علامتھ

یوہے اکھ پوشوی امنّج کرامتھ



کرشن گوبیس چھ مورلی منز سه الہام

ییمیک اکھ اکھ صدا لوکن چھ پیغام

کرشن گو ظلمہ الوانن سوٗ گگراے

ییمیک دسلابہ اپزس تالہ تزکراے

کرشن گو مقصدک نزدیک منزل

امس نش ساری حاصل گنے دل

۲۵۔ جو ہیں لوگ مایا سے مسرور ہوں، جہاں کی نظر سے بہت دور ہوں۔



कृष्ण अख बालुका पज़.रुक मुजस्सम
फ़.कुर ज.गतस योह्य अवतार आदम।

कृष्ण वुनरांच़. प्यठ सुलहुच करामत,
योह्य अख पोशिवन्य अमनुच अलामत।

कृष्ण गव यस छु मुरली मंज. सु इलहाम,
यम्युक अख अख सदा लूकन छु पैगाम।

कृष्ण गव ज़ुलमु अयवानन सु बगराय
येम्युक दंसलाबु अपजि.स तालि तंच़. क्राय।

कृष्ण गव मकसदुक नज.दीक मंज़िल
अंमिस निश सारिनुय हासिल कुनुय दिल।

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥
वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥
इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत ।
सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति ...

کرشن گو دۄن سمت گرھنک سمندر
اوتتھ وائتھ بنان پرتھ قطرِ ساگر

کرشن گو یکدلی ہند اکھ سہ آگر
وزان یتھ نِش چھ بدھ موت تال تے سُر

کرشن گیتایہ ہند گھہتے منج آش
گٹن، تاریکین منز سریہ پراگاش

کرشن گو اکھ پوتر رۄپ پریمک
تصوّر دل پسند سوندر شریک

کرشن گو زلزلہ کرودس تہ کامس
سہ خالص سون کران کم مایہ ترامس

کرشن ہردچ چھ پزہ آئینہ داری
اہنکارس بناوان انکساری

कृष्ण गव दुन समुत गछनुक समन्दर
ओतथ वातिथ बनान हर कतर् सागर ।

कृष्ण गव यकदिली हुंद अख सु आगुर
वुज़ान यथ निश छु मदमोत ताल तय सुर ।

कृष्ण गीतायि हुंद गाह तय मनुच आश
गटन तारीकियन मंज़ सिरियि प्रगाश ।

कृष्ण गव अख पवितर रूप प्रेयमुक
तस्सव्वुर दिलरुबा सोंदर शरीरुक ।

कृष्ण गव ज़लज़ला क्रूधस त कामस
सु खोलिस सुन करान कम मायि आमस ।

कृष्ण हृदयिच छु पंज़ आईन दोरी
अहंकारस बनावान इन्कसारी ।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥ जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥
साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः । प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥३०॥

28/1

کرشن گو تھنی دوہ دِچ مائے شُہُل سر ہیہ
موہس لوبس کُنی بڑہیہ ژالونی ریہ

کرشن گو پوشون گنگا یہ ہُند جَل
چھلان ہیندِس مُسلمانس دِلک مَل

کرشن گو فکرِ تارُن وأنسہ ہُند ویُژ
سہ چھا اُگُسُند سہ گو یُتھ کأنسہ ہُند ویُژ

کرشن گو آتما سَت آتما بَس
تمِس سوئے چھ حاصِل ڈے یہ گویس

۱۔ مائے = محبت ۲۔ بڑہیہ = شولہ (شعلہ) ۳۔ موہ = ہموکُرے ہیوتُے بھ۔ طمع ۵۔ ویُژ = جاداد ۶۔ سَت = دائمی پزر ۷۔ ڈے = مہربان

شری بھگوان کا ارشاد دسواں اُدھائے

آیہ سخن سنج بھگوان پھریون ہوئے۔ کہ ڈسن آئے قوی دست پیالے نمرے۔

कृष्ण गव धन्य दुदुच मालय शहुल स्रोह
मुहस लूबस फुनी ब्रेह जालवन्य रेह।

कृष्ण गव पोशवुन गंगायि हुन्द ज़ल
छलान हेंदिस मुसलमानस दिलुक मल।

कृष्ण गव फिर्किर तारुन वांसिहुंद व्युच
सु छा ग्रंक्यसुंद? सु गव प्रथकांसि हुंद व्युच।

कृष्ण गव आत्मा सत आत्मा बस
तमिस सोरुय छु हांसिल दयियि गव यस।

مہاساگر کرشن یم دل بناوان
تمے تس منز گونک دردانہ ژھاران
تلاشکی مر تہ گیانکی زیٹھ منزل
شعورس - لاشعورس تم بساوان

महा सागर कृष्ण यिम दिल बनावान ।
तिमय तस मंज़ ग्वनक्य दुरदानु छारान ॥
तलाशिय मर तु ज्ञानक्य ज़ीठ्य मंज़िल।
शऊरक्य ला शऊरक्य तिम बसावान ॥

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले,

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः

यच्चेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥ न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः

نَے مورلی



ہے! نَے چھ گرِھان شولہِ وہان، نار ہِشہ نار
زبہ ژینومُنن کرِشنہ ژبہ کُن
لار ہِشۍ لار

لاہو تہ پیٹھ زٕ ژچھ کراں کُنزلہ گنگس طوٕر
آکاشہ پہاٹھک سِریہِ ژبہ نش
جار ہِشہ جار

دِل پانہٕ برہمان۔ کیاہ چھ دُئی۔ کیتھ چھ وَنان بیر
یم چانہٕ نٕہج یکُ تہٕ سیدی
یار ہِشۍ یار

नय छें गछ़ान

हे नय छें गछ़ान. शोलु वुहान, नार हसा नार !
रेंह चेनुवुन्यन कृष्ण चेंकुन
लार हसा लार !

लाहूत प्यठ'च जुच छें करान कुनिर' कँगस तूर,
आकाशि प्यठुक सिरियि च़े निश
जार हसा जार !

नोटः-
१ लाहूत—तस्सवुफक थोद मुकाम २ कोहि तूर ।

दिल पानुब्रमान क्या छें दुइ कथ छि वनान वैर
यिम चानि नेहंज पेक्य त सप्द्य
यार हसा यार !

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥४॥ अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥५॥
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा । मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥

گوپالہٕ ! یٛژھکھ آرٕ پلَس آب کرکھ آب

اَکھ ژِہ تہٕ دوٕ دَس ہوٗکھرٕ لگان

دار ہٮ۪سہٕ دار

یِم چانہٕ کلے پھٹی تہٕ چِھنیکھ وِتھ تہٕ یِپدی وِتھ[۱]

تِم قُلزمَن ترٕی تار ہوٗنشکھ

تار ہٮ۪سہٕ تار

دَھن مارٕ نوٗلہٕ : کیٛہہ مگر مَن چھُ گنجگ نیاس

یَس مارٕ زِیہ پٮ۪ٹھ ، تَس نہٕ گنجِ

مار ہٮ۪سہٕ مار

ماٗرِتھ تہٕ زٕ لوٗنُم ، کرٕ شٕنہٕ لوٗبُم ۔ مَن مبہ سَرفراز[۳]

اَتھ یٕریمہ تِلٕنج پیٚٹھ مبہ گُندم[۲]

ذار ہٮ۪سہٕ ذار

[۱] دریاو
[۲] بیرس

جو قوت مرتے لوگ کی جان لے ... حقیقت مظاہر کی پہچان کے لیے

गूपाल् यछ्ख आर् पलस आब-करख आब
अख चूह त् दोदस होंखरि लगान
दार् हसा दार !

यिम चानिकले फंट्य त् चेंयख व्यथ त् सप्द्य व्यथ,
तिम कुलज़ुमन तेर्य तार् मोंशुख
तार हसा तार !

धन हार् नोंला, कें ह न् मगर मन छु गंजुक न्यास,
युस हारि च्रें पथ, तस न् कुनिच ।
हार हसा हार ।

हांरिथ ति ज़्यूनुम कृष्ण लबुम मन में सरफ़राज़
पथ प्रेम् पेंजं, प्यठ में र्यंदुम
ज़ार हसा ज़ार ।

नोट — १ सरफराज़—प्रसन्न, खोश ।

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः ।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥७॥ अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् । कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥

لچھ وانٔسہ بگرٕھتھ کرٕشنہٕ ژٕمایکھ تہٕ مہکھ دِل

اَتھ زٕنمہٕ پھِرس ژٕہیہٕ چھُہ لگان ژٕہیہٕ = سات

پیار ہیٚسہٕ پیار

کملاوٕ ہنہٕ وٕٹھ تہٕ گہے پھِرتہٕ مہ کُن نین ! نین = اَچھ

یوٗد تیر نظرِ دِکھ تہٕ دَپے

مار ہیٚسہٕ مار

کرٕشنا ! مہ دِیتھم سوزٕ ننتے نے مہ دِلس زٕدی

چھس دوٚہ ہین شہن بلٹھ بیٹھ ونگ ہوٗکھ

دار ہیٚسہٕ دار دار = دِود دار

موٗرلی چھ ندا ۔ ہاتفنی[1] لے ۔ شہ چھُہ امیک زٕوٗ ۱ فرشتہ

رُح بالہِ کرٕشن ہا فاضلنی سیم

شار ہیٚسہٕ شار !

लछ वांस् गछ़िथ कृष्ण् च़् मा यिख त् मुहकमन
अथ ज़न्म् फिरिस च़्युहँ छु लगान
प्यार हसो प्यार ।

कुमलाव हना वुठ त् गहे फिर त् मेंकुन नैन
योंद तीरि नज़ॆर दिख त् दपय
मार हसा मार ।

कृष्णा में द्य तथम सोज़ नतय नय म्य दिलस ज़ॆ द्य
छस दोन शहन प्यठ पथ वनुक
होंख दार हसो दार ।

मोरली छु निदा, हातफ़ुन्य लय, शह छु अम्युक ज़ुव
रुह बाल् कृष्ण् फांजिलॖन्य यिम
शार हसो शार ।



तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥१०॥
तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः

موٗرلی تہٕ موٗرلی ور

کرٛشنہٕ موٗرلی پیکرِ سوز و گداز
دِلرُبا، دِلکش، ہوٗرتے دِلنواز
یے اَچھ عرفان تہٕ شاہ قُدسی صِفات
پانہٕ موٗرلی در چھُ سرتا پا اعجاز

میٖرونے

میٖرونے پرانہٕ سمیچ بانسُری زان
یہانہٕ! گوڈھ وچھن نے کس چھُ وایان
شریک سوز لافانی شہس تام
شُھک ما اِک کرشن اوتار انسان

मोरलीदर

कृष्ण मोरली पैकरे सोज़ो गुदाज़,
दिलरुबा, दिलकश, सोन्दर तय दिलनवाज़।
लय अमिच इरफ़ान त शह कुदसी सिफ़ात
पान मोरलीदर छु सर ता पा मजाज़॥

नोट :-

१ पैकर—कालब, जिसम=मुज्जसम
२ कुदसीसिफात—रूहानी गोण थवन वोल
३ मोरलीदर—मरली वोल, कृष्ण जी।

मेंचिव नय

मेंचिव नय प्रानि वकतच बाँसुरी जान
बहानय, गोंछ वुछुन, नय कुस छु वायान
शरीरुक सोज़ लाफ़ानी शहस ताम
शुहुक मोलिक कृष्ण अवतार इन्सान॥

नोटः-

१. नय—मोरली

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम। भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥

सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव।

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥



کرشن بانسرِ ہیتھ برِتھ سیٹھ زَن اَتھ
یہِ مستیِ تہٕ فرہتھ چھ زَن لوزونی چینتھ
یہِ سنگیت چینتھ آئے کرشنا
یہ مورلی ہوٚدرمائے کرشنا
تہٕ زگتس یہ نے وائے
کرشنا کرشنا!

۱۶۔ کریں آپ پھر یہ مکمل عیاں جلال مقدس کا واضح نشان

ژٕ شوقہ سانٛ رُمَس رُمَس اگر کرٛشن گَرکھ
مَرکھ ژٕ مرنہ برٛونٛہہ- توَے نَسہٕ ژٕ زٕنٛہہ مَرکھ
چھ ژٕنمہ پھرِ لگاں تمَن ہُشد گرٛھاں یمَن
ترَکھ ژٕ بوٚسَرسَس اگر کرٛشن کرٛشن کَرکھ

चु शोकु सान रुमस रुमस अगर कृष्ण गरख
मरख चु मरन ब्रोंह-तवय नसा चु ज़ांह मरख
छि जनमुं फिर्‌य लगान तिमन यिंशिद गछान यियन
तरख चु भवसरस अगर कृष्ण कृष्ण करख।

कृष्ण बान्सुरी ह्यथ बारिथ सेहर् ज़न अथ
यि मस्ती तु फ़रहथ छि ज़न बोज़वुन्य चथ

यि संगीत चथ आय कृष्णा !
यि मोरलो मोदुर माय कृष्णा !

चु ज़गतस यि नय वाय, कृष्णा कृष्णा !

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि । कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् ।
॥ केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन । भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ॥

یہ لے زَن مَنس نار   دَزان زن ژندَن دار
کرَان رُح چھ بیدار   یہ یَس لوٗگ سُہ ہُشیار
تِمس کینہہ نہ پَرواے کرِشنا!
یہ موٗرلی گرِشم کرِاے کرِشنا!
مَنَس کینہہ نہ پَرولے
کرِشنا کرِشنا

—·—

یہ لے بوٗزنگ ہیس   دِوان الیشور یَس
سُہ یوگس اَندر مَس   کرَان شتشبجہاتس
تِمس نِش پزُر ڈرِاے کرِشنا!
یہ موٗرلی چھ بُڈشاے کرِشنا!
ہیسیح وَتھ چھ سِیُز تراے
کرِشنا کرِشنا

—·—

۱۹- ہوتے سن لُکے بھگوان یوں لب کُشا ہیں ارجن مرکے وصف لا انتہا۔

यि लय ज़न मनस नार दज़ान ज़न चंदन दार
करान दिल छु बेदार यि यस लोंग सु हुशियार

तमिस कैंह नु परवाय कृष्णा !
यि मोरली ग्रेशम क्राय कृष्णा !

मनस कैंह नु परवाय, कृष्णा कृष्णा !

यि लय बोज़नुक ह्यस दिवान ईश्वर यस

सु यूगस अन्दर मस करान शशजहातस
तमिस निश र्चर द्राय कृष्णा !

यि मोरली छें बंड शाय कृष्णा !
ह्यसच वथ छें स्यज़ त्राय, कृष्णा-कृष्णा !

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥
आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥

یہ لے پھیر گوشن تہ لج لام پوشن
چھ بلبل تہ توشن حقیقت چھ روشن
یہ مورلی چھ بے زھائے کرشنا!
یہ مورلی چھ یکتائے کرشنا!
یہ بے رنگ بے زھائے
کرشنا کرشنا

دھرم کرمے تہ انسان سیٹھاہ تی سیٹھاہ جان
یہ ساری چھ مانان چھ منزل سہ بھگوان
چھ گیتا تہ ہمرائے کرشنا!
یہ مورلی! ژرہ پوژ آے کرشنا!
سمے سور ہمرائے
کرشنا کرشنا

۲۲- سمجھ مجھ کو ویدوں میں تو وید سام امر دیوتاؤں میں واسو ہے نام

यि लय फीर गोशन तु लंज लाम पोशन
छि बुलबुल ति तोशन हकीकत छे रोशन
यि मोरली छे त्रे छाय कृष्णा।
यि मोरली छे यकताय कृष्णा।
यि बे रंग बे छाय कृष्णा !

नोट: १ गोशन-तरफातन २ यकताय - समुन
करन वाजन ३ बेरंग—बे इम्तियाज



धर्म, क्रय त इन्सान स्यठा रुय, स्यठा जान
यि सोरी छि मानान छु मंज़िल सु भगवान
छे गीता ति हमराय कृष्णा।
यि मोरली चे पोंज भाय कृष्णा !
समय सोर हमराय कृष्णा कृष्णा।

نَئِ ےٚ چھ یکسان کُنی ہیٚندٕ مُسلمان

چھُ رحمان بھگوان چھ بھگوان رحمان

دُیُٔی ہنز نہٕ کینہہ رٲے کرشنا!

یہٕ موٗرلی چھ بے نیاے کرشنا!

چھُ یکسان بے نیاے

کرشنا کرشنا

حِفاظت پَتش ہنز چھ وَتھ مُرسلن ؑ ہنز

گِہے موسیٰ ؑ ہنز گِہے عیسیٰ ؑ ہنز

گُپالاٚ زِ یہٕ تھزِ بہاے کرشنا!

یہٕ موٗرلی دِچِھ جاے کرشنا!

زِ یہٕ نِش یِم سٕمنتھ آے

کرشنا کرشنا

---

۲۵ ـ پھر گو یعنی رسیوں کا سردار ہوں ... سخن میں سخن حرف اور نکار ہوں

नये लय छें यकसान कुनी हेंन्द्य मुसलमान
छु रहमान भगवान, छु भगवान रहमान।
दुई हंज़ नु कांह राय कृष्णा !
यि मुरलो छे बे न्याय कृष्णा।
छु यकसान बे न्याय कृष्णा कृष्णा।

नोट;- १ दुई - वैर २ बेन्याय - न्याय रोस



हिफ़ाज़त पशन हंज़ छे वथ मोरसलन हंज़
गहे मूसहन हंज़ गहे ईसहन हंज़
गुपाला चें थंज़ जाय कृष्णा !
चें निश संमिथ यिम आय, कृष्णा कृष्णा।

—:o:—

नोट :- पुश —हयवान, २ मारसल—दरजस मंज
पंगमबरस र्वासथ

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।
गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥
उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥

ژُچھکھ تھُنی ہا ژِچھکھ تھُنیٗ ژُچھکھ ما نچھ ہیوٗ ہا تھُنی
یہِ تھُنی سوٗرگہِ گمیٗ اُنی نقش اَتھ چھ بنیٗ بنیٗ
چھُ کیوٗپڈ تہِ سرساے کرٛشنا!
یہِ موٗرلی چھ سسراے کرٛشنا!
عشیَن ژُ دُبراے
کرٛشنا کرٛشنا

— - —

کرٛشن جیا ژہ چھُے جے کُنے شہٕ، کُنے پیے
کُنی نے، کُنی یے بیتھی وہ یشرھان دے
یمے گوٗن ژہ نش دراے کرٛشنا
یہِ موٗرلی! ژہ نش زاے کرٛشنا
ژہ جے جے! ژہ لوگ آے
کرٛشنا کرٛشنا

۳۲۔ قضا ہوں جو گرتی ہے سب کو فنا ہا نئی زندگی کی ہوں میں ابتدا



चु छुख थंन्य, चु छुख थंन्य, चु छुख मांछ ह्यु व थंन्य
यि थंन्य मुरग कंम्य अंन्य, नकुश अथ छि बंन्य बंन्य,
छु वयूपिड़ ति सिरसाय क्रुष्णा !
यि मुरली छि ससराय क्रुष्णा !
हसोनन चु दुबराय, क्रुष्णा क्रुष्णा !

कृष्ण जी चें छुय जय, कुनुय शह कुनुय पय,
कुनी नय, कुनी लय, यिथी विहच यछान दय,
यिमव गुन चें निश द्राय कृष्णा !
यि मुरली ! चे थंज जाय कृष्णा !
चें जय जय, चें लुंग प्राय कृष्णा कृष्णा !

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ॥
बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥३५॥
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् ॥



گُلَن ہُنٛد تَرَنُّم ، شٔہرَن ہُنٛد تَکَلُّم

چھ ہوٚ رلی موٚدُر میوٚٹھ گفتار گُفتار

وُزُن شبنمک ، جلترنگ تار کٔن ہُنٛد

یہ موٚرلی سَراپا چھ سیتار سیتار

دِلَچ پوشوٚنی لے مَنچ زِنٛدہ آواز

یمَن منٛز چھ پوٚشیدہ اَسرار اَسرار

۳۷۔ منٛز رشتون ہیٚن ہوٚن واسدیوے اَشیر قبیلیٚ مین پانڈو کے ارجن امیر



गुलन हुंद तरंनुम थरचन हुंद तबकलुम,
छे मुरली मुदुर म्यूठ गुफ़्तार गुफ़्तार ।

वजुन शबनमुक, जलतरंग तारुकन हुंद,
यि मुरली सरापा छे सेतार सेतार ।

दिलुच पोशु वन्य लय मनुच जिन्दु आवाज़
यिमन मंज़ छि पूशीदु असरार असरार ।

ग्यव, दुद, तु गुरुस क्याज़ि चि अंदेश करिथ चोथ,
भगवानु ! यहुंद बागि बेरुत शेहजार लुकन वोत।
ज़ुव मंगतु जिगर मंगतु,च रुह मंगतु दिलो जान,
मोसूमु ! लगय क्याज़ि असो नूरि मक्खन रुयोथ॥

मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥ दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् ।

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः ।



بالہ کرشنن یام دِژ نم آگہی

یادِ گو ہر دسس ہیہ ذوقِ بندگی

بانسری ہند شہ چھُ ییمُک آتما

بانسری ہنز نے چھ سازِ دلبری

بوزِ وِ نی دوپ نے خودی ہند روپ رنگ

اَتھ خودی پیٹھ چھے فدا چھ بے خودی

وِچھ امی موہ لی حقیقژ واش کوڈ

کوڈ امی ظاہر زِ اوتار گو نبی

یکدلی منز کرِ و بیان سوہرخ د سفید

فاضلا! موہ رلی پنُن رنگ قودرتی

बाँसुरी

बालकृष्णन याम दिचनम आगंही[1]
पांद' गव हृदयस[2] म्य जौके[3] बंदगी।

बांसुरी हुंद शह छु प्रेमुक आत्मा
बाँसुरी हुंज लय छै साजे दिलबंरी।

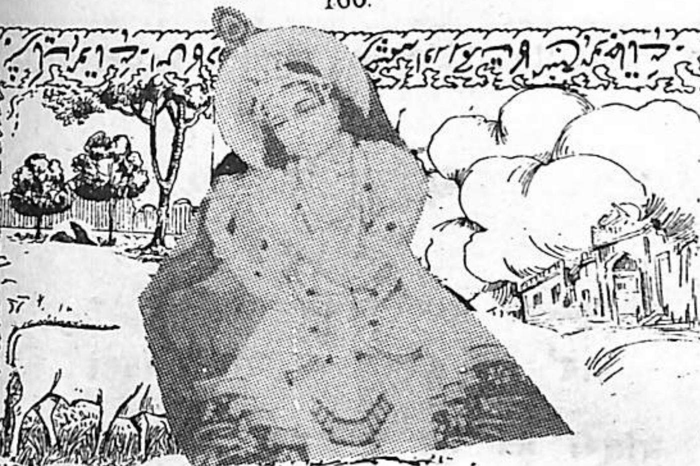
बोजवुन्य दो'प नय "खोंदी" हुंद रूप रंग
अथ खोंदी प्यठ छय फ़िदा लछ "बेखोंदी"

वुछ अमी मोरली हक़ीकंच वाश कोंड
कोंर अमी जांहिर ज्रि अवतार गव नंबी,

यकदिली[4] मंज कर व्यपान सुरखो सफ़ेद
"फ़ाज़िला" मोरली पनुन रंग कुदरती

नोट : 1. जाग्रती, ह्वास 2. दिलस, 3. शोक
4. ह्विशर

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥४०॥ यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् ॥४१॥
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन । विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥



بے خبر پاٹھی کرشنہ لالن گورنس
مرتبس منز ہیر ہور ہور کھورنس ¹درجہ
اتھ اندر میانین اتھن منز اوس کیاہ
واو ہالین منز بہ سودرس تورنس ²ساگرس

شعورس لاشعورس منز کرشن آم
وچھم زن سریہ، لیکن رنگ سیاہ فام
سہ یا ہتھ دارشنگی برونٹھی چھ ترا وان
وچھان تس گوپین ستی ایشور تام

Unconscious mind — Conscious mind

گیانی کو جب عرفان باری حاصل ہو جاتا ہے تو اس کے لیے ہر طرف ایک ہی پرماتما کا

वेखबर पा'ठ्य कृष्णु' लालन गोरनस,
मरतबस मंज् हेरि ह्यो'र 'ह्यो'र खोरनस।
अथ अन्दर म्यान्यन अथन मंज् बोस क्याह,
वाव् हाल्यन मंज् बं' सो'दरस तोरनस।

शऊरस लाशऊरस मंज् कृष्ण आम,
वुछुम जन सिरियि लेकिन रंगु सियाह फाम।
सु यामथ दर्शनुक्य बर वंथ्य छु त्रावान,
वुछान तस गूपियन स्'त्य ईश्वर ताम।

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम्।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥१॥
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया।
एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥३॥



دِلَن گو دِین و دَھرمُک آبرو کمَ
چھُ اَوگون پھانپھلاوان اِبنِ آدَم
ژہیکھ اَوتار سَت یوگ پھیر واپس
اَوَے کینہِ پیار پنچ کَل آشہ ہُر چھم

۱۔ اَوگون = بَدصِفت ۲۔ اِبنِ آدم = اِنسان ۳۔ اَوتار ہیوّن = پیٚیہ زیوّن۔

صحیح وَتھ رَٹھ ! کرشن چھےسیتی پانس
سُمیلتھ سنزرکس ذرّس ذراتس
جہانس سورِ سَتھ یام تار لَبنچ
نجاتچ رَز کرِتھ لاگس کنارس

सही वथ रठ ! कृष्ण छुय सुत्य पानस
सुमीलिथ पज़र्रकिस ज़रस ज़ुरातस।
जहांनस सोरि सथ याम तार लबनुच,
नजातचि रज़ करिथ लायस किनारस।

सञ्जय उवाच

दिलन गव दीनु धर्मुक आबिरू कम,
छु अवगोन फांफुलावान इब्नि आदम।
चु ह्यथ अवतार सतयोग फेरि वापस,
अवय किन्य प्रारुनुच कल आशिहचछम ॥

अवगोण—बदसिफत,:— काम, क्रोध, लोभ. मोह. अहंकार
याने शहवथ, चख. मालय, तमाह त गुरूर



یاہتھ یہِ آدَم دِین و دھرمُک پراٹھ یہِ سمسار
گیتا چھ شاہد کرشنہٕ گوپال سَپدِ نموٗدار
تَس سپدِ بے دِینن اِدھرمن تے یچھن ستی جنگ
مِیژ خاک سَپدن چھیکرس ظالِم تہٕ خطا کار

۲۸۔ ہوا دل کو ارجن کے رنج و ملال، کہا رحم و رقت سے ہو کر نڈھال۔

گیتا

کرشن جی ارجنس اسرار باوان
تمن ہند آنہ گیتا گاشراوان
سلوک نابد تہ الہامی شبد قند
پرن والس چھ امرت دامہ چاوان

कृष्ण जी अर्जुनस असरार बावान,
तिमन हुंद आनु गीता गोशरावान।
श्लोक नाबद तु इलहामी शब्द कंद,
परन वालिस छि अमृत दामु चावान॥



यामत यि आदम धर्मुक्दीनुक आटि यि संसार,
गीता छि शाहिद, कृष्णु गूपाल सपदि नमूदार।
तस सपदि बे दीनन, अधर्मन तय यछन सूत्य जंग,
मेच़ ख़ाक सपदन छेकरस बेदीन तु ख़ताकार।

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति । वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥

न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥



یام دھرتی بیٹھ سُنیدُ مُدیٰ یانہ عام
ژکہ سندی پاٹھی ٹنٹرنہ لگی کورو تمام
ست نمودار گو اَست کو فنا گو
کو سِری کرشنن صحی سمیک نظام

ہماری ادھر فوج ہے بے شمار، کمان دار بھیشم سا عالی وقار



याम दरती प्यठ सपुद मुदियानु थाम,
च़क्रि हिद्य पांठ्य नच़नि लंग्य कोरव तमाम।
सत नमूदार गव असथ काफूर गव,
क़ोरं श्रीकृष्णन सेही समयुक निज़ाम ॥



چھُ بھگوَن ناسہِ تراسَن بیخ گالان ۔ دَغابازَن چھُ مُوتُک پیالہٕ چاوان
گٹن منٛز پھالٕوان جیوَن اَدھرمَن
سُہ دین دار: حق پرستن تارٕ تاران

छु भगवान नासुं त्रासन बेख़ गालान ।
दग़ाबाज़न छु मोतुक प्यालुं चावान ॥
घटन मन्ज़ फाटुंवान ज़ीवन अधरमन ।
सु दीन्दार: हक़परसतन तारुं तारान ॥



سِتمگارو سِتم کوٗر پانٕی پانس
مہابھارت پھِرن رُود پرتھ زمانس
تُلِو پزرِچ عَلَم پوز روزِ قائیم
سبق دیت کرشنہٕ اوتارن جہانس

सितम गारव सितम कौर पान्य पनस।
महाभारत फ़िरुन रूद प्रथ ज़मानस ॥
तुलिव पज़रुच्य अलम, पो'ज़ रोज़ि क़ाइम
सबख़ द्युत कृष्ण अवतारन जहानस ॥

کرشن کہانی

اُگرسین اور دیوک دو بھائی تھے۔ اُگرسین متھرا کے راجہ تھے۔ دیوکی ایک کنیا تھی۔ اُس کا بھائی کنس تھا۔ کنس بہن کے ناطے دیوکی کو بے حد پیار کرتا تھا۔ دیوکی بالغ ہوئی دیکھ کر بہمہ صفت موصوف شورسین کے بیٹے واسدیو کے ساتھ بیاہی گئی۔ کنس کو دیوکی کی شادی سے بے حد خوشی ہوئی۔ اُس نے دیوکی کو جہیز میں کافی دھن دیا۔ اور بے حد خوشی کے ساتھ بہن کو الوداع کر رہا تھا کہ آسمان سے آواز آئی کہ ہے راجہ کنس! جس بہن کو تو اتنا پیار کرتا ہے اُس کا آٹھواں بیٹا تمہارا قاتل ہوگا۔ جب کنس نے ایسا سُنا تو حیران رہ گیا کہ یہ میں نے کیا سُنا۔ اچانک پھر یہی آواز آئی۔ کنس کو بہت غُصہ آیا اور قصد کیا کہ دیوکی کے بطن میں ہی اس کے آٹھویں بیٹے کو مار دیا جائے وہ اس طرح کہ جنم لینے سے پہلے ہی اُس کی ماں دیوکی کو موت کے گھاٹ اُتاروں اس کا بیٹا اُس کے بطن میں مر جائے۔ وقت آنے پر کنس نے دیوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار

پہلا ادھیائے۔ دھرت راشٹر نے کہا:-

कृष्ण कहानी

लेखक

मानस–किंकर कौशलकिशोर दास

उग्रसेन और देवक दो भाई थे। उग्रसेन मथुरा के राजा थे। उनका पुत्र कंस था। देवकी देवक की कन्या थी। छोटी बहिन होने के नाते कंस देवकी को अत्यन्त स्नेह करता था। देवकी को विवाह योग्य हुई देखकर सर्व-गुण सम्पन्न शूरसेन के पुत्र वसुदेव के साथ देवकी का विवाह स्थापित कर दिया। कंस को देवकी के विवाह की अत्यन्त खुशी थी उसने देवकी को दहेज में बहुत धन दिया और अधिक स्नेह होने के कारण कंस देवकी को स्वयं रथ में बैठा कर विदा करने गया। जिस समय कंस देवकी को विदा कर रहा था उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे ! राजा कंस जिस बहिन को तू इतना स्नेह करता है उसी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा। जब कंस ने इस प्रकार सुना तो वह आश्चर्य में पड़ गया कि यह क्या कहा। तो फिर वही आकाशवाणी पुनः हुई सुनकर कंस को बड़ा क्रोध आया तब कंस ने सोचा कि इसके गर्भ से ही वह आठवाँ पुत्र जन्म लेगा, अतः इसी को मार दूँ जब ये ही नहीं रहेगी तो फिर पुत्र कहाँ से होगा। ऐसा सोच कर

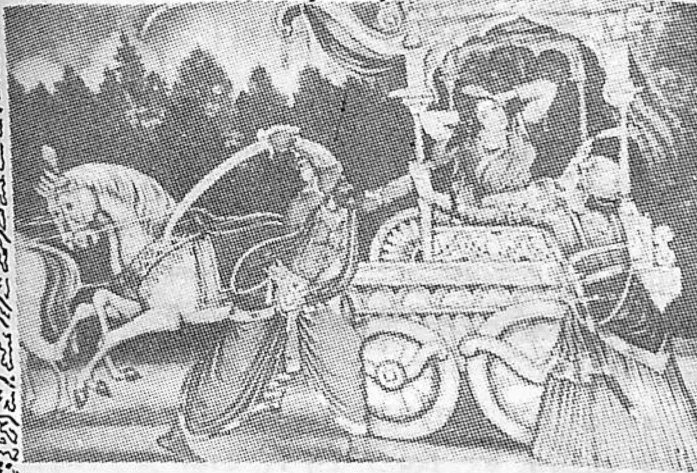
धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥१॥

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा । आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥२॥

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् । व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥३॥



کرشن مہاراج کی ماتا جی کو
بھائی کنس قتل کرنے لگا۔

تاکہ اُس کا بیٹا اُس کے بطن میں ہی مَر جائے۔ وقت آنے پر کنس نے دیوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار میاں سے نکالی۔ جیسے ہی وہ اُسے مارنے لگا تو کنس نے اُس کا ہاتھ پکڑا اور پرارتھنا کی کہ دیوکی عورت ہے۔ صنف نازک ہے اور آپ کی بہن ہے اور شادی شُدہ ہے۔ اِس لئے آپ اِس کو نہ ماریں۔ اِس کے جو بیٹے ہوں گے ہم اُنہیں آپ کے حوالے کریں گے۔

कंस ने देवकी के केश पकड़ कर उसको मारने के लिए तलवार म्यान से निकाली। जैसे ही मारने को तैयार हुआ, वसुदेव ने कंस का हाथ पकड़ कर कंस से प्रार्थना की कि यह स्त्री है, अबला है, आपकी बहिन है, फिर नवविवाहिता है अतः आप इसको न मारें। इसके जो पुत्र होंगे उन्हें हम आपको सौंप देंगे। जब देवकी के



कंस बड़ा पापी था। उसकी दुष्टताकी सीमा नहीं थी। वह भोजवंशका कलङ्क ही था। आकाशवाणी सुनते ही उसने तलवार खींच ली और अपनी बहिनकी चोटी पकड़कर वह उसे मारनेके लिये तैयार हो गया।

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥४॥
धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥५॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥६॥

کرشن جی نے جنم لیا۔ بھگوان نے اُن سے نند جی کے گھر گوکل پہنچانے کے لئے کہا۔ وہاں اُن کے گھر ایک لڑکی پیدا ہوئی تھی جسے یہاں لانے کے لئے کہا گیا۔ واسدیو کے ہاتھوں سے ہتھکڑیاں کھل گئیں اور دروازوں کے تالے بھی کھل گئے اور سب پہرہ داروں پر گہری نیند غالب آگئی۔ واسدیو نے کرشن کو ایک چھاج میں رکھ کر وہاں سے نکالا۔



को नींद आगई। प्रभु देवकी के सामने चतुर्भुजी रूप में प्रकट हुये। तब देवकी ने उनसे शिशु के रूप में बनने की प्रार्थना की और प्रभु छोटे बालक बन गए। भगवान ने उनसे कहा कि हमें गोकुल में नन्दजी के यहां पहुंचा दो और वहां उनके यहां कन्या उत्पन्न हुई है उसको यहां ले आओ। वसुदेव जी के हाथों में पड़ी बेड़ियां खुल गईं। समस्त द्वारों में पड़े ताले स्वयं खुल गए सब पहरेदार गहरी नींद में सो गये। जब श्रीकृष्ण को लेकर वसुदेव चले तो उस समय वर्षा बहुत जोरों से हो रही थी। इसलिये शेषनाग ने अपने फन- फैलाकर भगवान के ऊपर छत्रछाया कर दी। उस समय यमुना का जल ऊपर तक बढ़ आया



को नींद आगई। प्रभु देवकी के सामने चतुर्भुजी रूप
में प्रकट हुये।

واسدیو جی نے کرشن جی مہاراج کو دشمنوں کے چنگل سے پورے احتیاط
کے ساتھ نکالا اور سلامتی کے ساتھ جمنا جی کے کنارے پر پہنچ گیا۔
اسی دوران میں موسلا دھار بارش ہو رہی تھی اور جمنا میں کافی
پانی چڑھ گیا تھا اور دریا کو عبور کرنا ناممکن تھا۔ اتفاق سے
عین موقع پر شیش ناگ نمودار ہوا اور اپنا پھن پھیلا کر بھگوان
کے اوپر چھتر سایہ کر دیا۔ بھگوان نے جمنا کے بہاؤ کا مزاج بھانپ
لیا اور آہستہ آہستہ چھاج سے اپنا پیر باہر نکالا اور اس طرح جمنا
کو اپنے پیر کو بوسہ دینے کا موقعہ فراہم کیا۔ جمنا جی نے ان کے پیر
چوم لیے اور پرسن ہو گئے۔ تو فوراً واسدیو جی کو پار جانے دیا۔
واسدیو جی بھگوان کرشن کو لے کر گوکل پہنچ گئے۔ وہاں اس
وقت نند جی کے گھر میں سب سو رہے تھے۔ واسدیو جی نے کافی
راز داری کے ساتھ کرشن جی کو ماتا جسودا جی کے پاس لٹا دیا اور
کنیا کو اٹھا لیا اور متھرا آ کر دیوکی جی کو دے دی جیل خانے میں پہلے
ہی کی طرح تالے پڑ گئے۔ لڑکی کا رونا سنکر تمام پہرے دار جاگ اٹھے۔ خبر
پاتے ہی کنس وہاں آیا۔ مگر بچے کو دیکھ کر معلوم ہوا کہ یہ لڑکی ہے۔

مقدس گرو صاحب احترام جہاں کے دو جنموں میں عالی مقام



तब भगवान ने उनका भाव समझकर सूप से अपना पैर निकाल कर स्पर्श कराया। यमुना जी चरण स्पर्श कर प्रसन्न हो गई और उन्हें मार्ग देदिया। वसुदेव जब गोकुल पहुँचे तो वहाँ नन्द जी के घर सब सो रहे थे। अवसर पाकर वसुदेव जी ने माता यशोदा जी के पास कृष्ण जी को लिटा दिया। कन्या को उठा लिया और मथुरा जाकर देवकी को दे दिया। कारागार में पहले की भाँति ताले पड़ गये। कन्या का रुदन सुनकर सब पहरेदार जाग गये। खबर पाते ही कंस वहाँ आया, कन्या को देखकर उसने सोचा ये तो कन्या

مگر کہا گیا تھا کہ یہ لڑکا ہوگا، لیکن تب ہی دیوتاؤں کی بابا کا وچار
آتے ہی جونہی کنیا کو زمین پر پٹکنے کے لئے اُٹھایا وہ ہاتھوں میں سے
نکل کر فضا میں اُڑ گئی اور بولی" ارے راجہ کنس! تو مجھے کیونکر مارتا
تجھے مارنے والا تو گوکل میں پیدا ہو چکا ہے۔ کنس نے دربار میں آکر
منتریوں کو یہ خبر سنائی، تو سب نے کہا کہ یہ تو ہمارے بائیں ہاتھ کا
کھیل ہے۔ ہم اس بالک کا پتہ لگا کر اس کا کام تمام کریں گے۔ تب کنس نے
بہت سے راکھشوں کو کرشن کے مارنے کے لئے گوکل بھیجا، لیکن وہ خود ہی
موت کا شکار ہو گئے۔ جو بھی جاتا تھا اُس کو واپس نہ آتے دیکھ کر کنس
نے پُوتنا کو بُلایا۔ اُس نے کہا کہ گوکل میں جتنے بھی بچے ہیں، میں اُن سب کو
کھا جاؤں گی۔ یہ سُن کر کنس بہت خوش ہوا۔ پُوتنا اپنے پستانوں میں
زہر بھر کر گوکل میں آئی اور وہاں سب بچوں کو کھا کر نند بھون میں آگئی
اور ایک بہت سُندر گوپی کا رُوپ بنا کر جسودا سے کہا کہ میں لالہ کی
مبارکباد دینے آئی ہوں اور کرشن جی کو اپنی گود میں لے لیا۔ جسودا جی
گھر میں دُوسرے کاموں میں لگ گئی۔ پُوتنا نے زہر بھرے پستان کو
بھگوان کے مُنہ میں ڈالا۔ تب پربھو نے دُودھ کے ساتھ اُس کے

है पुत्र बताया था किन्तु तभी देवताओं की माया का विचार आते ही ज्योंही कन्या को पृथ्वी पर पटकने के लिए उठाया वह हाथ में से आकाश में उड़ गई और बोली अरे ! राजा कंस तू मुझे काहे मारता है तेरे मारने वाला तो गोकुल में पैदा हो चुका है। कंस ने दरबार में आकर मन्त्रियों को यह समाचार सुनाया तो सब ने कहा यह तो हमारे बाएँ हाथ का खेल है हम उस बालक का पता लगा कर अभी काम तमाम कर देते हैं। तब कंस ने बहुत से निशाचरों को कृष्ण के मारने के लिए गोकुल भेजा, लेकिन वे स्वयं ही काल का ग्रास बन गए। जा भी जाता उसको वापिस न आते देख कंस ने पूतना को बुलाया। उसने कहा ! गोकुल में जितने बच्चे हैं मैं सब को खाजाऊंगी। इससे कंस बहुत प्रसन्न हुआ। पूतना अपने स्तनों में विष लगा कर गोकुल में आई। वहाँ सब बच्चों को खाती जब नन्द भवन में आई तो बहुत सुन्दर गोपी का रूप बना लिया और यशोदा से कहा मैं लाला की बधाई लेकर आई हूं तथा कृष्ण जी को अपनी गोद में ले लिया। यशोदा जी गृह में अन्य कार्य में लग गई पूतना ने विष लिये स्तनों को भगवान के मुंह में डाला तब प्रभु ने दूध के साथ उसके प्राणों को भी पी



پرانوں کو بھی پی لیا
اس طرح شکٹاسُر
بکاسُر اور نرکاسُر
وغیرہ بے شمار
راکھشوں کا
خاتمہ کر دیا۔
بھگوان کرشن
پہلے ہی کنس
کو بھی مار سکتے
تھے، لیکن اِن
راکھشوں کو بھی

بھگوان کرشن پوتنا کے پران چوس رہے ہیں

مارنا تھا، اس لئے کہ کنس انہیں وہاں بھیجتا تھا اور پربھو جی انہیں آسانی اور کھیل کھیل میں مارتے تھے۔

بھگوان کرشن کی ماکھن لیلا میں بھی سیاست کارفرما تھی، کیونکہ برج کے علاقہ سے سب ماکھن عاریتاً بھیجا جاتا تھا۔ بھگوان نے

جنگ کی شورش



लिया। इस प्रकार शकटासुर, बकासुर, नरकासुर इत्यादि अनेक राक्षसों का संहार किया। भगवान कंस को भी पहले ही मार सकते थे लेकिन इन राक्षसों को भी मारना था अतः कंस उन्हें वहाँ भेजता और प्रभु खेल २ में उन्हें मार देते थे। भगवान की माखन लीला में राज-नीति थी क्योंकि ब्रज से सब माखन ऋण रूप में कंस को भेजा जाता था। भगवान ने

سوچا کہ اس سے دشمن کو قوت ملتی۔ یہ وہاں نہیں جانا چاہئے۔ نیز گوپیوں کا ان پر بہت ہی پیار تھا۔ جس دن کرشن جی ان کے گھر نہیں جاتے تھے وہ رو رو کر انہیں پکارتی تھیں اور ماکھن کھلاتی تھیں۔ بھگوان ہر ایک کام معجزے کے طور پر انجام دیتے تھے۔ ایک بار گھر میں ماکھن کی مٹکی توڑ دی۔ جسودا جی نے اُسے ایک اوکھلی سے باندھ دیا۔ بھگوان نے اوکھلی کو ٹیڑھا کر دیا۔ یمل ارجن کا ادھار (خلاصی) کیا۔

جب کنس کو بہت دن ہو گئے تب نارد جی نے آکر کہا کہ آپ بھگوان کرشن اور ان کے بڑے بھائی کو دھنش یگیہ کے بہانے بلاؤ اور تین کروڑ کنول کے پھول لانے کو کہو۔ کنس نے اکرور کو ان دونوں بالکوں کو لینے کے لئے بھیجا اور حکم دیا کہ اگر اتنے پھول نہ بھجوائے تو سارے گوکل کو جمنا میں بہا دینگے اکرور جی نے سب ماجرا نند جی کو سنایا۔ ماتا جسودا نے کرشن سے کہا کہ آج دور کھیلنے مت جانا، لیکن پربھو نے سب دوستوں کو ساتھ لیکر جمنا کنارے گیند کا کھیل شروع کیا۔ جب بھگوان کے پاس گیند آئی تو اُنہوں نے اسے جمنا میں پھینک دیا اور پھر خود بھی اُس میں کود پڑے۔ وہاں کالیا ناگ کو قابو میں لاکر اُس کے پھن پر ناچنے لگے اور اسی پر

۱۶۔ یہی ہیں یدھشٹر وہ کنتی کا لال ... وجے پر دکھاتا تھا اپنا کمال

धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥१७॥

बल मिलता है वहाँ नहीं जाना चाहिए। दूसरे गोपियों का उन पर बहुत स्नेह था। जिस दिन कृष्ण जी उन के घर नहीं जाते तो उस दिन वे रो-रो कर पुकारती थी और आने पर माखन खिलाती। भगवान प्रत्येक कार्य लीला द्वारा करते थे। एक बार घर में माखन की मटकी फोड़ दी। यशोदा जी ने ऊखल से बाँध दिया भगवान ने ऊखल को तिरछा करके यमुलार्जुन का उद्धार किया। जब कंस को बहुत दिन हो गये तब नारद जी ने आकर कहा कि आप दोनों बालकों को धनुष यज्ञ के बहाने बुलाओ और तीन करोड़ कमल के पुष्प लाने को कहो। कंस ने अक्रूर को दोनों बालकों को लेने के लिए भेजा और आज्ञा दी कि यदि इतने पुष्प नहीं भिजवाये तो सारे गोकुल को यमुना जी में बहा देंगे। अक्रूर जी ने सब समाचार नन्द जी को सुनाया। माता यशोदा ने कृष्ण से कहा आज दूर खेलने मत जाना। लेकिन प्रभु ने सब सखाओं को साथ लेकर यमुना किनारे गेंद का खेल शुरू कर दिया। जब भगवान के पास गेंद आई तो उन्होंने यमुना में फेंक दी और फिर स्वयं भी उसमें कूद पड़े। वहाँ कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः

नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥ काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ॥ नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनु...



تین کروڑ کنول کے پھول منگالیئے۔ اکرور جی جب بلرام اور کرشن کو لے جانے لگے تو تمام برج اُن کی جدائی میں رو رہا تھا۔ تب بھگوان نے اُن کو سمجھایا کہ ہم جلدی لَوٹ آئیں گے۔

متھرا پہنچکر کولیاپیڑ نامی ہاتھی کو نجات دلائی۔ کُشتی کھیلنے کے دوران بے شمار پہلوانوں کو پچھاڑا۔ اپنی ماتا دیوکی جی کا بدلہ لینے کے لئے کنس کو بالوں سے کھینچ کر، پکڑ کر اور مار کر اُسے مکتی بخشی۔ واسدیو اور دیوکی کو قید سے رہائی دی۔ کنس کے والد اُگرسین کو قید سے نکال کر تخت شاہی پر بٹھایا۔ جراسندھ اپنے داماد کا بدلہ لینے کے لئے سترہ بار فوج لے کر آیا۔ بھگوان نے اُن تمام کا خاتمہ کیا، پھر جب ۱۸ اٹھرہویں بار اُس نے حملہ کیا تو بھگوان دوارکا چلے گئے اور رات بھر میں تمام لوگوں کو دوارکا پہنچا دیا اور خود ایک پہاڑی کے پیچھے سے نکل کر

वहो कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया और उसी पर तीन करोड़ कमल के पुष्प मंगवाये। अक्रूर जी बलराम, कृष्ण को ले जाने लगे, तो समस्त व्रज विरह में रो रहा था तब भगवान ने उनको समझाया कि हम जल्दी आयेंगे। मथुरा पहुँच कुवलयापीड़ हाथी का उद्धार किया। मल्ल युद्ध में अनेक मल्लों को धराशायी किया। अपनी माता देवकी का बदला लेने के लिए ऊपर बैठे कंस को केश पकड़ कर मार कर उसका उद्धार किया। वसुदेव और देवकी को मुक्त किया। कंस के पिता राजा उग्रसेन को कारागार से निकाल कर उन्हें राज सिंहासन पर बिठाया। जरासन्ध अपने दामाद का बदला लेने के लिए सत्रह बार सेना लेकर आया। भगवान ने सबका ही संहार किया। जब अठारहवीं बार उसने युद्ध किया तो भगवान द्वारिका चले गए और रात भर में सब लोगों को द्वारिका पहुँचा दिया और स्वयं एक पहाड़ी के पीछे से निकल कर कूद पड़े। जरासन्ध ने सोचा इतने

नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥ अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ।

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत ।

کود پڑے۔ جراسندھ نے خیال کیا کہ اتنی اونچائی سے کود کر بچے نہیں ہونگے تاہم پہاڑوں کے ارد گرد آگ لگوادی۔ پھر خوش دلی سے بسر اوقات کرنے لگے۔

اِدھر بھوماسُر نے راجاؤں کی سولہ ہزار کنیاؤں کو اغوا کرکے انہیں حراست میں رکھا ہوا تھا۔ اُنہوں نے بھگوان سے التجا کی، اس پر بھگوان نے بھوماسُر کو قتل کرکے مکتی دلائی۔ پھر ان کے پرارتھنا کرنے پر پتنی روپ میں تسلیم کیا۔

کوروؤں پانڈوؤں کی آپس میں دشمنی تھی۔ پانڈو بھگوان کرشن کے معتقد تھے۔ کوروؤں نے جوئے کی چال چل کر پانڈوؤں کو ہرا دیا، اور سب کچھ داؤ پر لگوا دیا۔ بھری سبھا میں دروپدی کو ننگا کرنا چاہا۔ لیکن بھگوان نے ساڑھی کو اتنا دراز کیا کہ خود دُشاسن کھینچتے کھینچتے ہار گیا۔ ان کو جنگل بھیج دیا گیا۔ کبھی لاکھ کے محل میں آگ لگوائی، کبھی زہر دیا۔ لیکن پربھو سب طرح سے اُن کی حفاظت کرتے رہے۔ مہابھارت کے جنگ میں ارجن کے رتھبان بنے۔ جنگ میں جب ارجن کو موہ آیا تو اُسے گیتا کا اُپدیش دیا۔ جراسن کو بھیم کے ہاتھوں مروا دیا۔ آخر

۲۲۔ میں دیکھوں ذرا وہ جوان کون ہیں، جری کون ہیں، پہلوان کون ہیں

ऊँचे से बचे नहीं होगे और फिर पहाड़ी के चारों ओर आग लगवा दी. फिर प्रसन्न मन से रहने लगा। उधर भौमासुर ने राजाओं की सोलह हजार कन्याओं का अपहरण करके उन्हें बन्दी बनाया हुआ था उन्होंने भगवान से प्रार्थना की तब प्रभु ने भौमासुर का वध करके उन्हें मुक्त किया। फिर उनके प्रार्थना करने पर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया। कौरव और पांडवों की आपस में शत्रुता थी। पांडव भगवान कृष्ण के भक्त थे। कौरवों ने जुए का प्रपंच रचकर इनको हरा दिया। तथा सब कुछ दांव पर लगवा दिया। भरी सभा में द्रोपदी को नग्न करना चाहा लेकिन भगवान ने साड़ी को इतना बढाया कि स्वयं दु:शासन खींचते-२ हार गया। बन में भेज दिया, कभी लाक्षागृह में आग लगवाई, विष दिया। किन्तु प्रभु सब तरह से उनकी रक्षा करते रहे। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी बने। युद्ध में जब अर्जुन का मोह होगया तब उसे गीता का उपदेश दिया। जरासन्ध को भीम के द्वारा मरवा दिया। अन्त में

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥२२॥ योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥२३॥
एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत। सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम्॥

श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि । तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् कृपया परयाविष्टो

अन्त में विजय पांडवों की हुई क्यों वे धर्म की लड़ाई लड़ रहे थे। हमेशा धर्म की विजय होती है। पांडवों को राज्य दिला कर प्रभु द्वारिका आगये। भगवान कृष्ण की लीला का वर्णन कहां तक किया जाए। यह लेखनी विषय नहीं है विस्तार से वर्णन श्री भागवत में है।

मानस–किंकर कौशलकिशोर दास

فتح پانڈووٗں ہوئی کیونکہ وہ دَھرم کی لڑائی لڑ رہے تھے۔
فتح ہمیشہ دَھرم کی ہُوا کرتی ہے۔ پانڈووٗں کو راج دلا کر
پربھو دوارکا گئے۔

مانس کنکر کوشل کشور داس

۲۵۔ درون اور بھیشم ڈٹے تھے وہاں۔ جمے تھے وہیں راجگانِ جہاں۔
کہا دیکھ ارجن کھڑے صف بہ صف۔ لڑائی کی خاطر کرو سر بکف
۲۶۔ تب ارجن نے دیکھا کھڑے ہیں تمام۔ چچے۔ دادے۔ استاد ذی حرم
کہیں بیٹے پوتے کہیں یار ہیں۔ برادر ہیں۔ ماموں ہیں غمخوار ہیں
۲۷۔ خسر ہے کوئی کوئی دِلبند ہے۔ کہ اک سے لگا اک پیوند ہے۔
جگر سے جگر کی لڑائی ہے آج۔ کہ لڑنے کو بھائی سے بھائی ہے آج۔

उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥ तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान्

विषीदन्निदमब्रवीत् । भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्

ہَرے کرشنا !

کرشنہٕ ہیتو! ہیتو اسہِ گلین پوشہٕ زار کر !

بانسرِ یاشہٕ دِتو دِتو

اُدوَنن شالمارٕ کر

باغِ نشاطِ گُل پھولِن۔ گوپِین دِل تہٕ شِلہ برمن

کرشنہٕ! دِہانہٕ از مٕرزہ

شبنمس موختہٕ ہارٕ کر

چانہٕ گیٹشیامہٕ زھایہٕ نِش صُبح زنگین تہِ شرمہ ہیوٕ

سِریہٕ موکھس ننہٕ گرتھ

حاڑتن کرد گارٕ کر

باغِ نسیمہ عطرٕ زٕھٹھ۔ آیہٕ ہوایہٕ وار کران

پوشہٕ پدین زٕنہٕ گنتھ کرِ

توتہٕ ہمیس اہار کر

پیارِ وَنِین یمبرزلَن چانہِ دیایہ کُن نظر!
کرِشنہ دیالہ یوٗدنہ یکھ
سوٗنتہ بلن بیمار کرٕ
ییمیٚ نہٕ کرٕ دِلبرِی گُلن۔ ییٚس نہٕ کرٕ دِلبری گُلوٗ!
ذرشنگی بَرٕ مٔژرٕ تِمن
پرٕ یمہٕ ہِتی دِل تیار کرٕ
اَزتہ گنگایہ بِھٹی برٕ زِھن۔ چانہِ وُہ میٚدٕ یارٕ کرٕ
گُل مہٕ رِمس رِمس گیٚنن
کیاہ یِمےٚ ژُم ہیٚہ تار کرٕ
تارِ شِکارِ سوال بہ سوال۔ ہانٛز کھیلس نہٕ گرٕنڈیوٗن
وِونی اگر لانکہِ بیٚھٹہ ترٕ گھ
میوٗن دِل شرمسار کرٕ
چانہِ خیالہ کِنیٚ وُنم۔ سایہ بِدی دِل پسند سوخَن
فاضِلن تازہ ترٕ غزل
اَزینٛن اِشتہار کرٕ

हरे कृष्णा !

कृष्ण' यितो यितो यितो ! स्यकिल्यन पोशिजार कर
बांसुरी शाह् दितो दितो ! द'दवनन शालमार कर

बागि निशा त गुल फोलन, गूपियन दिल त शिल ब्रमन
मेठि, दहान' कर सोखन, शबनमस म्वक्त'हार कर

चानि ग्येशामि छायि तल. सुबहि निगीन ति शामि प्यव
सिर्यि मोखस नन्यर क'रिथ हा'रतन किरदगार कर

बागि नसीम' अ'तरि छठ, आयि बेबायि वर करान
पोशि पद्यन च्य गथ करिथ, तोति हम्यस अमार कर

प्यारवन्यन य'म्बर ब्रलन, चानि पोत छाई कुन नजर
कृष्णा' दयाल ' यो'द न यिख, सोन्त' बलन ब्यमार कर

यम्य न कर दिलबरी गुलन, यस न' क'र दिलबरो गुलव
दर्शनक्य बर मुचर तिमन, प्रेम' रस वागुजार कर

अज ति गंगायि ब'ठ्य अछन चानि' वो'मेजि तारिक'य
कल मे रुमस रुमस गनन, क्याह् यिमय रुम मे तार कर

तार' शिकारि स्वल ब स्वल हां'ज' स्यलिस न अंद यिवन
वोन्य अगर लांकि प्यठ तरख म्योन दिल शर्मसार कर

चानि खयाल किन्य वनिम, सासबद्य शार दिलपसन्द
फाजिलुन ताजतर गजल, क्याह् पनुन इश्तिहार कर



گرٕشنہٕ اچھو گتھم رنٛگ تہٕ بے رنٛگ پانٕ گوم
بے رنٛگی منٛز جانِ پیٛرٕ ژُمک رنٛگ سنیوم
پریمہٕ رنٛگ پیٛرٕ آوِتھ گژھنے رنٛگ نظرِ آم
اُتھی رنٛگس منٛز سِریہِ پیٛرٕ اگاش دِل بنیوم

Krishn Leela

کرشن لیلا

कृष्ण लीला

از:-
ڈاکٹر نظام الدّین - پروفیسر آف ہندی، اسلامیہ کالج۔ سرینگر

کشمیر کے رسکھان

فاضل کاشمیری نے "بالک استھا" اور "کرشن لیلا" نامی کرشن کاویہ کی تخلیق کر کے سور داس، رسکھان، پرمانند، نروتم داس، رتنا کر، سبھی ہمیشہ بھارتی کی روایت کو قائم رکھا ہے۔ اس کے ساتھ قومی یک جہتی کو بڑھاوا دیتے ہیں ہم انہیں امیر خسرو، نظیر اکبر آبادی، ساغر نظامی، بیکل اتساہی

اور نفیر بنارسی وغیرہ کی روایت میں نمایاں پاتے ہیں۔ اُنہوں نے ستگورو سری بابا گورونانک کی بانی کا ترجمہ کرکے ایک عظیم کارنامہ انجام دیا ہے۔ جس کی سراہنا سکھ قوم نے کی ہے۔

فاضل کاشمیری ایسے وسیع القلب شاعر ہیں جو تخیّل کی ہم آہنگی کے تاروں کو جھنکار عطا کرتے ہیں۔ وہ پُر خلوص ماحول کے تخلیقی کام میں جٹے ہوئے ہیں۔ اُن کے اشعار میں بانسری کے میٹھے سُر تخیّلی ہم آہنگی کا پیغام دیتے ہیں۔ جو کوئی اس سُر کو سُنتا ہے "جے جے ہری" پکارتا ہے۔ اس کا دل پاک ہو جاتا ہے، وہ بادشاہ ہو جاتا ہے۔ پھر اس میں ہندو مُسلمان کی تمیز نہیں رہتی۔ فاضل صاحب کرشن جی کو گنگا کا ایسا پاون جل (پوتر پانی) تصوّر کرتے ہیں جو ہندو اور مُسلمان کے دلوں کے میل کو دھو ڈالتا ہے ؎ کرشن گو لوپشہ وَن گنگا یہ ہند جل

چھلان ہیندن مسلمانن دُلک مَل

فاضل صاحب کرشن کی بانسری پر موہت ہیں، کیونکہ اس کا سُر پریم آتما ہے۔ جلوۂ روشنی حیات ہے اور ساز دلبری ہے

مرلی دھر کرشن اس میں پھونک مار کر گیان و عرفان کے ظاہری و باطنی راز عیاں کرتا ہے، جس سے اطراف عالم میں کیف و سرور چھا جاتا ہے جس سے نبی اور اوتار ایشور اللہ کے بھیجے ہوئے تسلیم کئے جاتے ہیں۔ اور رحمان و بھگوان ایک ہی ذات باری کے دو نام ہیں۔

فاضل صاحب کرشن کے رنگ و روپ پر ہو یت ہیں انہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ پھولوں میں رنگ و بو کرشن کی بدولت ہے اور انہیں کے دم قدم سے یہ سنسار ایک حسین گلزار بنا ہوا ہے۔

فاضل صاحب کی یہ کتاب "کرشن لیلا" بھارتیہ کرشن کاویہ میں ایک گرانقدر اضافہ ہے اس سے قومی ایکتا پر اعتقاد رکھنے والوں کے دل و دماغ اور زیادہ روشن ہو جائیں گے۔

نظام الدین

(DR. NIZAM-UD-DIN)
Prof. of Hindi
Islamia College, Srinagar
(Kashmir)

مترجمہ: پرتھوی ناتھ کول سائل کشمیری۔

Dr. Jagat Mohani

M. B., B. S.

King Edward Medical College, Lahore (Punjab Old)

MEDICAL SUPERINTENDENT

RATTAN RANI HOSPITAL 10 A. M.-4 P. M.

GYNAECOLOGIST & OBSTETRICIAN

بھگوان کرشن نے

گیتا جی میں ارشاد فرمایا ہے :-

خاک، پانی، آگ، ہوا، خلاء، من، ذہانت اور خودی۔

اِن آٹھ متضاد اقسام سے میری پرکرتی بنی ہے۔ یہ میری آدتیہ اوستھا ہے۔ اوستھا کو بھی سمجھنے کی کوشش کرو۔ اس کے علاوہ میری اُتم اوستھا سویم ہی میں ہے۔ جس پر ساری کائنات کا دارومدار ہے۔ تم اس بات کو سمجھ لو، کہ تمام جاندار اور بے جان انہیں دو سے بنے ہیں۔ میں اس بدلتے سنسار کی ابتداء ہوں اور اختتام بھی۔

دکھشنایَن ہمینے کے درمیان جوکہ آٹھویں کرشن پکھش کے کالے پندرہ واڑے میں آتا ہے، جیل کی ایک کالی کوٹھری میں، جہاں موت کے کالے سائے منڈلا رہے تھے، آدھی رات کے عالم میں مُتبرک ساعت پر ایک سیاہ فام بچے، کرشن نے جنم لیا۔

گیتاجی کی بھاشا کی روشنی میں کرشن کے معنی ''کالے'' کے ہیں جس کی مناسبت کرشن پکھش کے تاریک پندرہ واڑے کے ساتھ ہے۔ یہ وہ سمے تھا جب جگت کے تمام رہنے والے لوگوں میں ناسمجھی، جہالت اور پاپ کا دور دورہ تھا۔۔۔ اندھکار کے اس دور میں کرشن جیسے روشنضمیر رہنما کے وجود کی اشد ضرورت تھی جو اس رات میں ظہور میں آیا۔ اسی ذات نے کالے کرتوت والے منشوں کو روشنی بخش کر مکتی کا راستہ دکھایا۔ انہیں گیتاجی کے درس سے برہمانڈ کی اصلیت اور مایا کی ماہیت سے واقف کیا۔

بھگوان ہری جو کرشن کے روپ میں اپنی بال اوستھا کے کھیل کود جیسے مکھن چوری، گائے پالک، مُرلی منوہر کھیلتا رہا۔ ان میں سے پہلے

کرشن کے مُرلی منوہر ہونے کو بڑی اہمیت حاصل ہے کیونکہ جب پیارے



بھگوان کرشن جی مُرلی بجاتے تھے تو اُس میں سے شانتی اور سکون کے لہرے پیدا ہوتے تھے جن سے سُننے والوں پر محویت کا عالم چھا جاتا تھا۔ کرشن جی سیکیولرازم کے اوّلین پرچارک تھے۔ انہوں نے لوگوں کو بھائی چارہ اور یکسانیت کا درس دیا اور سماج کے زہریلے سانپوں اور



رہزنوں کو بھی قابو کر لیا اور ان کا سدھار کیا ۔



کرشن جی دھرم کے محافظ، سیاست دان اور ایک عظیم رتھ بان تھے۔

انھوں نے انسان کو دنیاوی جھنجھٹوں سے آزاد کر دیا۔ وہ ہمہ دان اور حق پرست تھے۔ وہ پانڈوؤں کے دوست اور پشت پناہ تھے۔ انھوں نے ظلم و تشدد، جعلسازی اور دغابازی جیسے شریر عناصر کو جڑ سے اکھاڑا۔ ان حقائق کا ذکر مشہور رزمیہ مہابھارت میں ملتا ہے۔

ہمارے فاضل صاحب ایک کرشن بھگت ہیں۔ رسالہ "دھرم یگ" کے تنظیمی ادارہ نے انہیں "کشمیر کا رسکھان" کا خطاب دیا ہے۔ کیونکہ انہوں نے رسکھان کی طرح کرشن بھگتی کا بھرپور اظہار اپنے شبدوں میں ہمارے سامنے پیش کیا ہے۔ انہوں نے کرشن کے بچپن، جوانی اور دیرینہ سالی کے سندر مرقعے سجائے ہیں۔ ان کی کتاب "کرشن لیلا" کی لیلاؤں میں ترنم، تاثیر اور گداز ہے۔ ان کے اس عظیم کام سے سوشلزم اور قومی یکتا کے میدان میں اچھے نتائج برآمد ہوں گے۔

میری دعا ہے کہ یشودھا کا بالک کرشن جو دائیں ہاتھ میں حلوا، بائیں ہاتھ میں مکھن کا پیڑا گلے میں زرق برق جواہرات کا ہار، شیر کے ناخنوں سے آراستہ بدن ہمارے فاضل صاحب کو ابدی مسرت عطا کرے!

30-8-83

(ڈاکٹر جگت موہنی)

کشمیری علم و ادب اور قومی یکتا کے کاز کو بڑھاوا دینے کے سلسلہ میں فاضل کاشمیری نے شری جپ جی صاحب اور سلوک مہلہ نواں اور ستھ رنگ کے بعد اس بار اپنی کرشن لیلا ئیوں کا یہ حسین گلدستہ "بالک اوستھا" عوام کے بہبود کے لئے منظرِ عام پر لانے کی بار آور کوشش کی ہے، جو واقعی ایک اہم کارنامہ ہے۔ مجھے امید ہے کہ اس دلکش کتاب کی اشاعت سے قومی بھائی چارہ کی وسعت میں دور رس نتائج برآمد ہونگے۔

علی محمد لنگر

سرینگر کشمیر
۱۹ نومبر سنہ ۱۹۸۳ء

PROF. CHAMANLAL SAPRU

180-Lalnagar, P. O. Natipur
Srinagar (Kashmir) 190 015

از : پروفیسر چمن لال سپرو

بھگوان شری کرشن نے اپنی لیلاؤں سے سب کو یکساں طور پر اپنی طرف کشش کی ہے۔ اُن کا بال کرُوپ سُورداس اور رس خان جیسے عظیم شاعروں کے لئے پرستش کا موجب بن گیا ہے۔ اِن دو شاعروں نے اپنے محبوب بھگوان کرشن سے متعلق واتسلیہ رس یعنی شفقتِ مادری کا جذبہ) سے مملو نظموں کو تخلیق کر کے ہندی ادب کو امر بنا دیا ہے۔

کشمیری زبان کے رس خان الحاج فاضل کاشمیری ایک ایسی شخصیت ہیں جو حقیقی معنوں میں اُن تنگ حدود سے بالاتر ہیں جو آج کے انسان کو مذہب اور رنگ و نسل کے فرق میں جکڑے ہوئے ہیں۔ فاضل صاحب موجودہ دور میں تمام مذاہب کی بنیادی وحدت کو سمجھ کر

اپنی سُریلی زبان اور مخصوص پیرائے میں اس کا پرچار کرتے ہیں۔ وہ پرم ہنس رام کرشن مہاراج کے سروِ دھرم سمنوئے (Harmony of religions) کو آج کے دور کے مسائل کا واحد حل تصوّر کرتے ہیں۔ وہ گیتا جی، مقدّس انجیل، قرآن شریف اور سری گورو گرنتھ صاحب میں ایک ہی پیغام کی مختلف صورتیں دیکھتے ہیں۔

فاضل صاحب کو مَیں نے دھارمک محفلوں اپنی کرشن لیلائیں سُناتے دیکھا ہے۔ وہ ایسی محفلوں میں اپنی شاعرانہ صلاحیتوں سے ایک پُرکیف سماں باندھ دیتے ہیں۔ اُن کی زبان میں سلاست، روانی اور تاثیر ہے۔ اُن کی شعری زبان ایسی سہل اور جاذبِ توجّہ ہے جسے پڑھنے والے اور سُننے والے بغیر کسی کدو کاوش کے آسانی سے سمجھ کر بھرپور حظ اُٹھاتے ہیں۔

اِس بار فاضل صاحب نے بالک اوستھا کی کتابت و تزئین اپنے من چاہے انداز میں خود کی ہے، جو اُن کا ہی حصّہ ہے۔

چمن لال سپرو
25.1.84

25-1-1984

Fazil Kashmiri is, I have understood, unparalled devotee of Lord Krishna. Although he is born muslim, but he is no longer now muslim in a strict theological sense, or Pandit. He is actually established in that state of divine devotion of Lord that has risen in that state where he has gone above limitation of caste creed and colour. He is just devotee of Lord Krishna. I hope this

अध्याय १६

श्रीभगवानुवाच अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थिति

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम् ॥ दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च। दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥

book 'Krishen Leela' will illumine the whole world.

I hope that each & every human being should and must own this valuable book, so that they also rise to that state of Divine oneness where limitation of caste and creed are not recognized.

6-11-83. Lakshmanjoo
Guptaganga

(شیو آچاریہ سوامی لکشمن جو مہاراج - گپت گنگا سرینگر)

शैवाचार्या स्वामी लक्ष्मण जो महाराज

فاضل کاشمیری ایک مذہب زدہ ذات نہیں ہیں۔ وہ
اپنے مذہبی عقائد کے دوش بدوش دوسرے دین و دھرم کے
بانیوں اور پرستاروں کی اقدار کا احترام کرتے ہیں، جس کے
آئینہ میں اُن کی "انوارِ محمدیؐ"، "شری جپ جی صاحب"، اور "کرشن لیلا"
جیسی گرانقدر تصانیف پیش کی جا سکتی ہیں۔

زیرِ نظر اُن کی تصنیف "کرشن لیلا" اُن کی کرشن بھگتی
کی تصویر ہے۔ فاضل مصنّف نے اس میں سری کرشن جی مہاراج
پر سُندر نظمیں لکھی ہیں۔ انہیں سُنکر اور پڑھ کر سامعین
اور قارئین رُوحانی کیف و گداز حاصل کرتے ہیں۔ میلادوں،
خالصہ درباروں اور دھا اتسوؤں میں حاضرین اُنہیں اپنا کلام
سُنانے کی فرمائشیں کرتے ہیں اور اُن کی قدردانی کرتے ہیں۔

فاضل صاحب کے ادبی مطبوعہ شہپاروں سے ہمارے
دیس میں قومی یکتا اور بھائی چارہ کو قوت ملتی ہے۔

۲۶ فروری ۱۹۸۴ء

رمیلا رام بنجیون ... گوگجہ باغ



कृष्ण-लीला

Krishna Leela

This Beautiful Book

of the Personality of

Kṛishṇa

provides the key to how humanity can become united in peace, prosperity and friendship around a common cause.

**Printed at Hind Samachar Printing Press,
Pacca Bagh, Jalandhar City.**



KRISHNA LEELA